Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

1537

श्री विश्वेश्वराय नमः

योगिराज श्री मुलखराज जी

लेखक

योगाचार्य श्री चन्द्रमोहन जी महाराज

प्रकाशक

श्री सिद्ध गुफा

मु० पो० सवांई, आगरा।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

योगेश्वर चरित्रमाला

श्री विश्वेश्वराय नमः

योगिराज श्री मुलखराज जी

लेखक

योगाचार्य श्री चन्द्रमोहन जी महाराज

प्रकाशक

श्री सिद्ध गुफा

मु० पो० सवाई, आगरा।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

: प्रकाशक :

योग प्रशिक्षण केन्द्र

श्री सिद्ध गुफा

मु० पो० सवांई, आगरा ।

मूल्य : एक रुपया पच्चीस पैसे

: मुद्रक :

कल्याण प्रिंटिंग प्रेस, आगरा

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

विषय सूची

१. जन्म स्थान ३
२. पाणिग्रहण संस्कार ९
३. सदगुरु दर्शन व पूर्ण कृपा ११
४. पूर्व जन्म का ज्ञान १७
५. तुरीय स्थिति की दिव्य घटनायें ... १९
६. उड्यान गति द्वारा पहाड़ से नीचे आना २२
७. ब्रह्मपुरी के जंगल में चीते का दर्शन और प्यार २३
८. दुकान पर अखंड समाधि व माता को दर्शन २६
९. कुम्हारों पर कृपा २८
१०. पिता पर कृपा व ध्यान दीक्षा ... ३१
११. दृढ़तर अभ्यास व कुण्डलनी जागरण ... ३४
१२. सहज समाधि एवं निर्भयता ... ३६
१३. ध्यानावस्था के विशेष अनुभव ... ३७
१४. चित्त निर्माण की योग्यता व आस्मितानुगत योग ३९
१५. सिद्धों की पहिचान ४०

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

१६. एक सिद्ध महात्मा से मिलाप ... ४२
१७. पत्नी का देहावसान व स्वर्ग्य गति ... ४३
१८. एक-एक पग पर दस-दस हजार अश्वमेध यज्ञ का फल ४७
१९. श्री मुलखराज जी को तृतीय नेत्रदान ४९
२०. सिद्ध लोक दर्शन ५०
२१. श्री प्रभुजी के चरण कमलों में मलाया देवी के लिंग शरीर का दर्शन व उसको सद्गति ५१
२२. श्री वैकुण्ठपति भगवान विष्णु के दिव्य दर्शन ५३
२३. ब्रह्मपुरी दर्शन ५६
२४. जल में दिव्य गुणों का प्रकाश ... ६०
२५. पिशाच की निवृति ६१
२६. मंत्रोपचार करने वाले ब्राह्मण पर विपरीत प्रभाव ६२
२७. श्री प्रभुजी की काश्मीर यात्रा ... ६४
२८. उन्मत्तों की तरह पड़े हुए योगी को आदेश ६८
२९. पागल के वेश में योगी ६९
३०. श्री मुलखराज जी व श्री गोपालानंद जी को लाहौर में योग प्रचारार्थ भेजना ७१
३१. लाहौर में योग प्रचार ७२

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

भूमिका

योगीराज श्री मुलखराज जी महाराज परम् कारुणिक महापुरुष थे। उनका जीवन अतीव उज्जवल व परम् तेजोमय रहा। ६ जुलाई सन् १११९ से उन्होंने योगमार्ग में पदार्पण किया। योग-योगेश्वर प्रभु सद्गुरुदेव श्री रामलाल जी महाराज के चरणारविन्दों को प्राप्त करके उन्होंने अपने जीवन को धन्य बना लिया। अभी कुछ दिनों पहले मैंने एक छोटी सी पुस्तक लिखी थी जिसका सम्बन्ध भाई ब्रह्मचारी श्री गोपालानन्द जी से हैं, जिसमें भाई श्री गोपालानन्द जी का संक्षिप्त जीवन चरित्र व उनके ध्यानानुभव लिखे गये हैं। इस पुस्तक के लिखने के बाद मेरे मन में बार बार यह संकल्प बनता रहा कि मैं श्री मुलखराज जी महाराज की जीवन कथाओं को भी लिखने का प्रयत्न करूँ। किन्तु श्री मुलखराज जी महाराज के जीवन चरित्रों को प्रचार की व्यस्तता के कारण मैं जल्दी में क्रम बद्ध नहीं कर पाया इसीलिये लम्बा समय निकलता चला गया। श्री मुलखराज जी महाराज का जीवन सद्गुरुदेव योग-योगेश्वर प्रभु श्री रामलाल जी महाराज की चरण शरण में आने के बाद एकदम अलौकिक बन गया। उस अनुकम्पा से वह बहुत थोड़े समय में ही सम्प्रज्ञात योग की पराकाष्ठा पर पहुँच गये। कई वर्ष तक लगातार तुरीय स्थिति में रहे। उनकी आँखें खुलाने से भी खुलती नहीं थी। आँखें बन्द रहते हुए सहज स्थिति में ही अपने आप को उस नित्य परम् चेतन में विलीन रहते थे। उनका मन अपने पराये के ज्ञान से अतीत हो गया था। जिस समय उनकी आँखें समाधि से

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

खुलती थीं उस समय वह प्राणीमात्र को अपना आत्मा देखते थे। इस स्थिति में जो भी व्यक्ति उनके सामने आया उसी ने परम् अनुग्रह को प्राप्त किया और अपने आप को कृतार्थ किया। हमारे आचार्यों ने तुरीय-स्थिति का वर्णन बड़े ऊँचे शब्दों में लिखा है यहाँ तक कि जिस वातावरण में ऐसे महापुरुष रहते हैं उस वातावरण से भी सर्व-साधारण प्राणी कल्याण को पा लेते हैं। हमारे आचार्यों ने इन भावों की पुष्टि मुक्त कंठ से की है "यस्मिन् देशे वसेद्योगी ध्यान योग विचक्षणा, सोपि देशो भवेत् पूतः किम् पुनस्तस्य बान्धवा।" अर्थात् जिस देश में एक ध्यान योगी बास करता है वह देश भी पवित्र हो जाता है और उसके सम्पर्क में रहने वालों की तो बात ही क्या है। श्री मुलखराज जी महाराज के जीवन में यह उक्ति बिल्कुल चरितार्थ में मिलती है। उन्होंने अपनी तुरीय स्थिति में जिसको एक बार भी आंख उठा कर देखा वही कृतार्थ हो गया। जैसी जिसने मनोकामना की वैसी ही सफल होकर के चट उसके सामने आ गई। श्री मुलखराज जी महाराज की जीवन कथाओं के विषय में मैं विशेष रूप से तो नहीं जानता था किन्तु उनके सम्पर्क से जो भी कथाएँ मुझे उपलब्ध हुई हैं वह सभी कथाएँ मानव समाज के लिये परम् हितकर हैं। जो इन कथाओं को मन लगाकर पढ़ेंगे उनकी योग प्रवृत्ति तो बन जाना स्वाभाविक ही है इसके अतिरिक्त उनके जीवन में घटित होने वाले योग सिद्धान्तों को समझ करके जो भी उस मार्ग पर अपने आप को चलाने का प्रयत्न करेंगे वह अवश्य ही श्री प्रभुजी की परम् अनुकम्पा को प्राप्त कर अपने आप को योगयुक्त बना लेंगे।

शेष शुभ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जन्म स्थान

योगीराज श्री मुलखराजजी महाराज का जन्म स्थान, जैसा कि उनकी जीवन कथाओं से उपलब्ध हुआ है, पंजाब प्रान्त के अन्तर्गत जिला गुरुदासपुर की तहसील बटाला के अन्तर्गत दलेरपुर नाम के गाँव में है। उनका जन्म लगभग संवत् १९५५ विक्रमी में क्षत्रिय कुल अन्तर्गत अरोड़ वंश में हुआ। श्री मुलखराज जी महाराज के दादा का नाम लाला गुरदित्तामल और पिता जी का नाम लाला देवीदास और माता जी का पवित्र नाम रत्न देवी था। लाला गुरदित्तामल प्राचीन आर्य सिद्धान्तों को मानने वाले परम् ईश्वर भक्त दान पुन्यशील साधू-सेवी सज्जन थे अपने गृहकार्य करते हुए भी साधू सेवा में रत रहते थे। व परोपकार्य में लगे रहा करते थे उन्हीं के पुन्य प्रभाव से उनके पुत्र लाला देवीदास या और कुटुम्बी समुदाय सभी धर्म परायण थे।

लाला देवीदास जी ज्यों-ज्यों युवावस्था को प्राप्त हुए त्यों-त्यों अपने व्यवसाय को बढ़ाने की लगन इनके मन में दृढ़ होती गई और इन्हीं संकल्पों से प्रेरणा पाकर के कुछ ही समय बाद अमृतसर में रहने लगे। श्री मुलखराज जी महाराज का जन्म तहसील बटाला के अन्तर्गत दलेरपुर नाम के गाँव में ही हो चुका था, किन्तु बहुत छोटी अवस्था में ही यह अपने पिताजी के साथ अमृतसर में ही आ गये थे, वहीं पर इनका लालन पालन हुआ। होनहार बिरवान के होत चीकने पात।" होनहार के लक्षण प्रकृति की देन से पहले से ही अनुभव में

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

आने लगते है । श्री मुलखराज जी महाराज का बाल्यकाल पवित्र सतों जैसा था वह बचपन में भी बहुत गम्भीर रहते थे। उनके उज्ज्वल मस्तिष्क मण्डल को देख करके हर व्यक्ति अपने मन में यह समझ लेता था कि इस शरीर में छिपे हुए यह कोई परम संत हैं। वह अपने साथियों के साथ विशेष खेल कूद में अभिरुचि नहीं लेते थे।

उनके नेत्र वत्र विकारों से व अन्य शारीरिक चेष्टाओं से यह भासित होता रहता था कि वह किसी विचार में मग्न हैं और बात थी भी इसी प्रकार की। उनकी अन्तरमुखी वृत्ति हर समय स्मरण में लगी रहती थी और मन में रह रह करके वैराग्य के भाव जागृत हुआ करते थे। जिस समय इनकी अवस्था लगभग ५ वर्ष की हुई तो इनके पिता लाला देवीदासजी ने महाजनी शिक्षा प्राप्त करने के लिये एक विद्यालय में प्रवेश कराया।

कुछ समय उस विद्यालय में लगातार शिक्षा पाते रहे, किन्तु शिक्षा में भी इनका मन विशेष नहीं लगता था प्रत्युत कहीं पर किसी सत्संग का वर्णन सुनते या और कहीं पर संत महात्माओं की चर्चा चलती तो मन की प्रवृत्ति रह रह करके उसी ओर जाया करती थी। संत चरित्र व भगवत्-कथायें इनको बहुत प्यारी लगती थी माता-पिता की आज्ञानुसार ये विद्यालय जाते थे, मनको विद्याध्यन में लगाने का पूरा-पूरा प्रयत्न करते थे किन्तु ऐसा करने पर भी मन अनवरत् भगवत् कथाओं के सुनने की ओर आकर्षित रहता था।

वैराग्य की लहरें सो रह-रह कर मन में उठती थीं। मन यह चाहता था कि किसी महापुरुष की शरणागति मिल जाय और हम उनके हो रहें। ऐसे समय में ही इनके घर में अकस्मात

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

एक घटना घटी। किसी रोग से पीड़ित होकर के इनकी चाची जी का देहान्त हो गया वह देवी चाची होते हुए भी इनको माँ से अधिक प्यार करती थी। श्री मुलखराज जी महाराज के सामने मृत्यु का यह पहला दृश्य था। इससे पहले यह मौत को नहीं जानते थे कि मौत किस वस्तु का नाम है। इस समय श्री मुलखराज जी महाराज की अवस्था लगभग आठ वर्ष की थी। जिस समय श्री मुलखराज जी महाजनी विद्यालय से मध्यान्ह अवकाश में अपने घर गये तो इन्होंने अपने से परम् प्यार करने वाली चाची को मृत अवस्था में पड़े हुए जमीन पर देखा। अपनी चाची को इस प्रकार जमीन पर पड़े हुए देख करके और सभी लोगों को शोक ग्रस्त देख करके श्री मुलखराज जी ने अपने माता पिता से पूछा कि क्या बात है आज यह मुझसे क्यों नहीं बोलती हैं।

माता पिता ने इनके सरल वचनों को सुन करके इनकी चाची के मर जाने की बात इनको समझा दी। अपनी चाची के देहावसान का इनके मन में सीमांत दुःख हुआ और उसी समय से वैराग्य के भाव और भी अधिक दृढ़ रहने लगे। इस छोटी अवस्था में ही इनके मन में यह विचार आने लगे कि संसार रहने की जगह नहीं है। यहाँ जो जन्मा हैं उसका मरना जरूरी है अतः सबका योग व वियोग बराबर बनता ही रहता है। इस घटना के बाद श्री मुलखराजजी महाराज का मानस चिन्तन और भी अधिक बढ़ता गया और उनके मन में यह विचार बराबर घूमने लगे कि मनुष्य काल का ग्रास होने से किस प्रकार बच सकता है।

श्री मुलखराज जी जहाँ भी कहीं सत्संग होता वहीं जाकर सत्सग सुनते और यह जानने की चेष्टा करते रहते कि मनुष्य

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

को परम् श्रेय किस उपाय से प्राप्त होता है। भगवत् दर्शन कैसे उपलब्ध होते हैं। श्री मुलखराजजी महाराज के मकान के पास में ही थोड़ी दूर पर ही किसी मन्दिर में नैतिक साधु-सत्संग होता था। अपनी माता जी के साथ श्री मुलखराज जी वहाँ नित्य नियम से जाया करते थे। कदाचित् अपने विद्यालय से आने में इनको कोई विलम्ब हो जाया करता था तो भी एक बार सत्संग के स्थान पर पहुँच अवश्य जाया करते थे। जिस मन्दिर में यह सत्संग के लिए जाते थे। उस मन्दिर का नाम हर मन्दिर साहब था। इनका यह नियम था कि यह सत्संग में सबसे पहले आ जाते और बाद में अधिक देर तक बैठा करते। जो महात्मा सत्संग करते थे। उन्हें बड़ा आश्चर्य होता है कि यह छोटा बच्चा इतने लम्बे समय तक चुपचाप सत्संग में बैठा रहता है उसमें बाल सुलभ चांचल्यता भी नहीं है।

इनके ऐसे सरल स्वभाव को देखकर हर व्यक्ति का मन इनकी ओर आकर्षित हो जाता था। एक रोज अवसर पाकर सत्संग कराने वाले महात्मा ने इनके मानस भाव पूछे व इनके बतलाने पर हृदय के अन्दर छिपे हुए तीव्र वैराग्य भाव समझकर उस महात्मा का हृदय स्वतः ही बहुत आल्हादित हुआ व बड़े प्यार के साथ इनसे कहा "बेटा समय आने पर तुम्हें महापुरुष मिलेंगे। उनकी पूर्ण कृपा से तुम अपने परम् लक्ष्य को पाओगे।" श्री मुलखराजजी का बाल जीवन इसी प्रकार से शनैः शनैः निकलने लगा।

विद्याध्यन भी अब अधिक समय तक नहीं चल सका क्योंकि कुछ तो विद्या अभ्यास में इनकी अपनी रुचि तो नहीं थी दूसरे इनके माता पिता भी आर्थिक उलझनों के कारण अधिक समय तक पढ़ा नहीं सके। विद्याध्यन को छोड़ देना पड़ा और अपने

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

माता पिता के साथ व्यवसाय कार्य में सहयोग देने के लिये यद्यपि अपनी माता पिता के कहे अनुसार अपने व्यापार कार्यों में बाकायदा लगे रहते थे, किन्तु यह सब कार्य करते रहते हुये भी यथा तथा अवसर निकाल करके साधु सत्संग के लिये अवश्य जाया करते थे। एक दिन के सत्संग में श्री हर मंदिर साहब में एक साधु को अपनी शिष्या सहित गद्गद् कंठ से अपने प्रभु के गुणानुवाद करते हुए देखा।

वह एक कबीर पंथी महात्मा थे। उनकी विह्वलता और मधुर संकीर्तन के प्रभाव से इनके मन में उनके प्रति ऊँची श्रद्धा बन गई किन्तु परिणामतः निष्कर्ष कुछ भी नहीं निकला। वह महात्मा स्वयं जिज्ञासु थे व उनको भी आत्मोत्कर्ष करा करके परम लक्ष्य तक पहुँचाने बाले महापुरुषों की खोज थी। उनके सत्संग से भी इनको आत्म पिपासा में कोई शांति नहीं मिली, प्रत्युत महापुरुष मिलन की दृढ़ लगन दिन प्रतिदिन बढ़ती ही चली गई।

जहाँ पर जिस महात्मा का नाम सुनते उनके दर्शनार्थ वहीं पहुँचते किन्तु अन्त में निराशा ही हाथ लगती। एक बार इसी हर मंदिर साहब में पुनः एक महात्मा मिले जो परिक्रमा में बैठे हुए हरि गुण गान कर रहे थे। वह कोई ऐसा पद गारहे थे जिसमें प्रभु के निर्गुण रूप का वर्णन था। जिसको श्री मुलखराज जी ने खूब ध्यान से सुना और सुनते ही उनका शरीर सुध बुध रहित होगया। इनकी इस स्थिति को देख कर अन्य सत्संगियों ने उन गुणानुवाद गाने वाले महात्मा से पूछा कि महाराज ! इनको क्या हो गया है। उन्होंने जवाब दिया इन पर यह गुरुदेव की कृपा है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

इनके हृदय में उन्हींके चरणों का प्रकाश है। समय आनेपर वह कृपामय इनको पूर्ण रूपेण अवश्य अपना लेंगे और यह अपने मनुष्य जीवन के पूर्ण फल को पाजायेंगे। इसी प्रकार से कई एक साधु संतों के दर्शन हुए, किन्तु कहीं भी मन को संतोष नहीं मिला। किन्तु वैराग्य के उच्चतम भाव मन में अधिकाधिक बढ़ते ही चले गये। इनके मनोगत वैराग्य भाव अब इनके माता पिता व अन्य कुटुम्बियों से भी छुपे न रह सके। उन सब ने मिलकर विचार किया कि इस बालक की जल्दी से जल्दी शादी करदी जाय ताकि यह गृह बन्धनों में पूरी तरह जकड़ जाय अन्यथा यह बालक कहीं साधु संतों के साथ निकल गया तो दुबारा हाथ नहीं लग पायेगा।

———

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पाणिग्रहण संस्कार

श्री मुलखराज जी के माता पिता इस लगन में तो थे ही कि जल्दी से जल्दी इनकी शादी कर दी जाय अन्ततः माता पिता ने प्रयत्न करके इनका विवाह संबन्ध करा दिया । श्री मुलखराज जी का विवाह सम्बन्ध जि० अमृतसर में जगदेव ग्राम निवासी ला० झंडाराम जी की सुपुत्री आयुष्यमती मोहन कौर से संवत् १९०५ में लगभग २० वर्ष की आयु में हो गया और श्री मुलखराज जी का गृहस्थ जीवन सब प्रकार से सुखमय चलने लग गया । एक बार अकस्मात एक घटना घटित हुई और वह यह थी—श्री मुलखराज जी के श्वसुर ला० झंडाराम जी कारणवश बहुत बीमार हो गये। उनको अमृतसर के बड़े अस्पताल में दाखिल करा दिया गया। श्री मुलखराज जी नित्य प्रति उनको घर से भोजन बनवा करके अस्पताल में भोजन कराने के लिये जाया करते थे ।

अकस्मात् एक दिन उनको एक मुसलमान फकीर मिले और उन्होंने इनसे भोजन की याचना की। इन्होंने प्रसन्नता पूर्वक उन्हें भोजन करा दिया। जिसके फलस्वरूप उस फकीर ने इनको एक बाल अपनी जटा से निकाल कर दिया और कहा कि इसको अपने श्वसुर के किसी कपड़े में बाँध देना और उनके सिराहने रख देना जिसके परिणाम से तुम्हारे श्वसुर आज ही रोग मुक्त हो जायेंगे । उनके कथनानुसार श्री मुलखराज जी ने वैसा ही किया जैसा उन्होंने कहा था और उसके फलस्वरूप श्वसुर तत्काल राजी हो गये । उस फकीर की इस चमत्कारी

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

शक्ति को देख करके उनके प्रति इनके मन में बहुत प्रेम होगया जिसके परिणाम स्वरूप यह कभी कभी उस फकीर को मिलते रहे। वह फकीर भी इनके भावी जीवन की उत्कृष्टता को समझ कर कभी-कभी इनसे मिलने के लिये आया करते थे और अपने मन से इनका पूर्ण सम्मान करते थे। प्रारब्धानुसार गृहस्थ-जीवन में इनकी धर्मपत्नी ने दो कन्याओं को जन्म दिया क्रमशः गृहस्थ जीवन रहते भी इनके मन के ऊपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वैराग्य धारायें बराबर चलती ही रहीं।

———

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सद्गुरु दर्शन व पूर्ण कृपा

जा का जा पर सत्य सनेहू
सो तिन्हि मिलै न कछु संदेहू ।।

गोसाईं तुलसी दास जी की इस उक्ति के अनुसार उज्वल प्रारब्ध सामने आया। उन दिनों काँग्रेस का आन्दोलन धूमधाम से चल रहा था। बराबर जलूस निकलते थे लीडरों की जय बोली जाती थी। लोगों के मन में बहुत बड़ा उत्साह था। स्वराज्य की कामना करने वाले व जोश वाले गीत बोलने वाले नवयुवकों को पकड़-पकड़ कर जेल में ठूँसा जा रहा था। भारतवर्ष की जेलें भारत के नौजवानों से ठसाठस भर दी गईं थीं।

श्री मुलखराज महाराज के मन में भी यह भारी उत्साह था कि हम अपने देश के लिए कुर्बान हो जायें या कोई ऊँचा कार्य करें किन्तु इनकी ऐसी प्रबल इच्छा होने पर भी ऐसा हो नहीं पाता था। अप्रत्यक्ष शक्ति इनकी हर समय रक्षा कर रही थी। एक रोज श्री मुलखराज जी काँग्रेस के एक भारी जलूस में गीत गाते जा रहे थे, "हिन्द दा तख्तोताज असां नहीं छड़ना।" मन में बड़ा भारी जोश था 'हम मर जायेंगे जेल जायेंगे या स्वराज्य लेकर रहेंगे' इन दिनों वह उनकी वैराग्य की धारायें अब देश-सेवा के रूप में परिवर्तित हो चुकीं थी। बड़ी ऊँची उमंगों के साथ श्री मुलखराज जी जलूस में जा रहे थे। उन दिनों सद्गुरुदेव योग-योगेश्वर प्रभु श्री रामलाल जी महाराज अमृतसर में ही निवास कर रहे थे।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

उनको नैपाल हिमालय से आये हुए कई वर्ष व्यतीत हो चुके थे। अमृतसर में साधारण गृहस्थियों की तरह निवास कर रहे थे। उनके दिव्य स्वरूप को कोई भी समझ नहीं सकता था। श्री प्रभुजी प्राय अपने स्थान पर ही रहते थे। किसी प्रकार के जलसे तमासे व सभाओं में नहीं जाते थे। किन्तु उस दिन उन शांत सागर के मन भी एक तरंग आई उसके साथ काँग्रेस का जलूस देखने के लिए बाजार में निकल पड़े। काँग्रेस का जलूस चौक मल्लासिंह की तरफ से जा रहा था। श्री प्रभुजी सब प्रकार से परिपूर्ण योग-योगेश्वर एक दुकान पर खड़े हुए जलूस की शोभा को देख रहे थे।

इसी समय जोशीले गीत गाते हुये श्री मुलखराज जी सामने से निकले श्री मुलखराज जी की उम्र उस समय लगभग २४ या २५ वर्ष की होगी। श्री प्रभुजी की दृष्टि उनके शरीर पर पड़ी पूर्व संस्कारों का प्रत्यक्षीकरण हुआ। श्री प्रभुजी का हृदय द्रवित हो उठा और गद्गद् कंठ होकर पूछ उठे, "बेटा आज-कल तुम कहाँ हो, तुम्हारा जन्म किस जगह हुआ है तुम्हारा नाम क्या है।" किन्तु श्री प्रभुजी की यह सभी बातें श्री मुलख-राज जी के मन को अच्छी नहीं लगी। श्री प्रभुजी उस समय साधारण सूती मिल के कपड़े पहने हुए थे।

श्री मुलखराज जी ने श्री प्रभुजी को उत्तर दिया, 'यह देश द्रोहियों के मिल के कपड़े पहले उतारो व फूँक कर आओ व शुद्ध खद्दर के वस्त्र पहन कर आओ तब मैं तुमसे बात करूँगा। श्री मुलखराज जी के मुख से निकले हुये ऐसे कड़े शब्द सुनकर अपने पन के नाते मन में तो प्रसन्न ही रहे किन्तु बाहरी लौकिक मर्यादा से चुप ही रह गये व लौट कर अपने स्थान पर चले आये। वहाँ पर बहुत से सत्संगी बैठे हुए थ ध्यान योग की

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

चर्चाऐं चल रहीं थी किन्तु श्री प्रभुजी के मन का दृश्य कुछ और ही प्रकार का था। मनोमुद्रा से प्रसन्न दिखलाई दे रहे थे, किन्तु साथ ही कुछ गम्भीर दिखलाई देते थे। कभी-कभी मुख पर साधारण हँसी आ जाती थी और उसको रोक जाते थे। इस सब दृश्य को सभी सत्संगी देख रहे थे और मन ही मन यह सोच रहे थे कि आज यह क्या विलक्षण कृपा है।

इसी बीच में (पडित रामरत्न एक पुराने सत्संगी थे) प्रभुजी आज यह क्या विचित्र दृश्य है आज आप बार-बार किसको स्मरण करके हँस रहे हैं। श्री प्रभुजी कुछ थोड़े हँस कर बोले "बेटा आज हमें एक तुम्हारा भाई मिला है। वह जन्मों से बिछड़ा हुआ है किन्तु हमारा ही बालक है। हमने उसको देख लिया है इसलिए कुछ ममत्व के संस्कार मन में बन आये हैं वैसे उसके मिलने का संस्कार काल अभी आठ वर्ष बाद का है, किन्तु जब हमने उसको देख लिया है तब उसके यह आठ वर्ष आठ दिन में निबट जायेंगे और आज के आठवें दिन हमारा बच्चा हमारे पास अवश्य-अवश्य आ जायेगा। रामरत्न ने प्रार्थना की प्रभो ! मुझे आज्ञा दीजिये अमृतसर में ऐसा कौन सा बच्चा है जो आपके पास न आ सके मैं उसको फौरन जल्दी ही बुला लाऊँगा। श्री प्रभुजी ने कहा नहीं वह आठ दिन के अन्दर स्वयं ही अवश्य-अवश्य आ जायेगा संस्कार उसको ले आयेगा। शनैः शनैः वह आठ दिन निकल गये सभी सत्संगियों को मन में बड़ा उल्लास था।

सब यह चाह रहे थे देखें आज आठवाँ रोज है कौन वह बालक है जिसको श्री प्रभुजी आज इतने दिन से याद कर रहे हैं। आज आठवाँ दिन है हम भी उस बड़ भागी बालक को देखें जो आते ही श्री प्रभुजी के महान् अनुग्रह को पायेगा। सभी

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सत्संगी इस विचार में निमग्न थे। प्रातः काल लगभग ६ या ६॥ बजे का समय होगा दर्शनार्थी स्त्री पुरुषों का यातायात प्रारम्भ हो चुका था। सभी लोग अपने-अपने मन की कामनाएँ श्री प्रभुजी के चरणारविन्दों में बतला रहे थे। श्री प्रभुजी लोगों की भावना अनुसार उनके भले के लिए उपयोगी साधना बतला रहे थे इतनी देर में इसी समुदाय के अन्तर्गत एक २४ या २५ साल का नवयुवक बालक सामने आया। उसके हाथ में उसकी अपनी जन्मपत्री थी उसको किसी ने बतलाया था कि यह योगीराज हैं। जन्म-पत्री को देखकर के भूत भविष्य की बातें कहते हैं मैं भी अपनी भविष्य की बातों के प्रारब्ध को जानूँ इसी आशा को लेकर के यह नवयुवक श्री प्रभुजी के चरणों में उपस्थित हुआ था। किन्तु बड़े भारी आश्चर्य की बात यह थी जिस उमंग व उत्साह के साथ-साथ जन्म-पत्री को हाथ में लिए हुए यह बालक श्री प्रभुजी की ओर आगे बढ़ रहा था।

श्री प्रभुजी के दर्शन पाते ही इसका वह उत्साह व उमंग भंग हो गया। मन कुछ गिर सा गया धीरे से पीछे हटना चाहा किन्तु श्री कृपानिधि जी ने इसको देख लिया था। श्री दीनानाथ जी बोल उठे, "बेटा क्यों, तुम पीछे क्यों हट रहे हो, आओ हमारे सामने आओ हम तुम्हारे भूत भविष्य की बातें बतलायेंगे। यह वही बालक था जिसने आज से आठ रोज पहले काँग्रेस के जलूस में जाते हुए श्री प्रभुजी को कुछ कड़े शब्द प्रयोग किये थे। किन्तु था यह उनका अपना जिसका इन्तजार आठ रोज से सभी सत्संगी कर रहे थे अपना जानकर श्री प्रभुजी ने स्वयं उसको अपने पास बुला लिया जन्म-पत्री देखनी आरम्भ कर दी।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

थोड़ी ही देर में इसकी जन्म-पत्री को देख करके व उसके पुष्ठों को उलट-पुलट के श्री कृपानिधि जी ने फलादेश बतलाया, "बेटा तुम्हारी जन्म-पत्री मैं लिखा है आज से ही तुम योगी बन जाओगे आज से तुम्हें अपने भूत-भविष्य का ज्ञान स्वतः ही होने लगेगा। तुम्हारी आँखें बन्द होंगी किन्तु बन्द आँखें होते हुए भी तीन लोक के नजारे तुम यहीं बैठे देख सकोगे। श्री प्रभुजी फलादेश कह रहे थे किन्तु उनकी कृपामयी वाणी को सुन करके आने वाले बालक के मनमें अत्यन्त आश्चर्य व कुतूहलता बढ़ती ही जा रही थी। वह यह समझता था ये क्या कह रहे हैं आज ही मैं भूत-भविष्य का ज्ञाता बन जाऊँगा, आज ही मुझे भगवान के दर्शन मिल जायेंगे यह कैसे सम्भव हो सकता है। सुनने वाले अन्य सत्संगियों के मन में भी बड़ा आश्चर्य था और सभी इस आकांक्षा में थे देखें इस बालक को अभी-अभी किस महान् कृपा का दान देने वाले हैं।

सभी की कुतूहलता को बढ़ाते हुए श्री प्रभुजी ने बालक को अपने पास बुलाया व कान मैं कुछ बतलाया और आज्ञा दी, "बेटा आँखें बन्द करके बैठ जाओ वह बालक श्री प्रभुजी की आज्ञा को पाकर के अपने साधन पर बैठ गया। साधन में बैठते ही जिज्ञानुभूति जारी होगई। भूत भविष्य के नजारे सामने आने लगे। उसको बाहर के बरामदे में ध्यान में बैठा करके और मकान में ताला बन्द करके श्री प्रभुजी ओकाड़ा मण्डी चले गये।

यह बालक प्रातःकाल से बैठा रहकर सायंकाल ४ बजे तक उसी स्थिति में बैठा रहा। सायं समय ध्यान समाधि से उठ कर उसने देखा श्री प्रभुजी वहाँ नहीं हैं। श्री प्रभुजी को न पाकरके मन को बड़ा कष्ट हुआ। वह आठ दिन की अवधि ८ वर्षों के समान बिताई किन्तु इस आठ दिन के अन्दर उनका ध्यान योग

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ऊँचे स्तर का बढ़ चुका था। इन्हीं का नाम श्री मुलखराज जी था। श्री प्रभुजी के कल्याण कृपामय चरण कमलों में योगोपदिष्ट हो जाने के बाद इन्होंने ध्यान योग में ब्रह्मलोकादि उत्तमोत्तम दृश्यों को देखा। श्री प्रभुजी ने इनको मूलाधार कमल में ऋद्धि सिद्धि सहित गणपति जी के ध्यान करने की आज्ञा दी थी, किन्तु श्री प्रभुजी जब तक ओकाड़ा मण्डी से लौट कर आये तबतक श्री मुलखराज जी ने षटचक्रों के सभी देवताओं के दशन पालिये थे।

एक रोज इनके मन में यह आया कि मैं यह जानूँ कि श्री प्रभुजी के चरण कमलों में मेरा पिछले, जन्म का क्या संस्कार है यह बात उन्होंने समाधिस्थ होकर के मूलाधार कमल के अधिष्ठात्री देव श्री गणपति जी से पूछी कि मेरे पूर्व जन्म के माता पिता कौन हैं और श्री प्रभुजी कौन है कृपा करके मुझे यह बतलाइये। श्री गणपति जी ने उनको उनका पूर्व जन्म दिखलाया।

———

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पूर्व जन्म का ज्ञान

श्री गणपति जी ने उनको पूर्व जन्म का दर्शन कराया। श्री मुलखराज जी महाराज ने ध्यान में देखा कि एक बहुत सुन्दर पहाड़ है। वहाँ एक गाँव दिखलाई दे रहा है। उस गाँव वालों का रहन-सहन बहुत सुहावना है। पहाड़ से पानी के श्रोत झड़-झड़ कर निकलते दिखाई दे रहे हैं। इस गाँव में एक मकान है जिसका एक द्वार पूर्व की ओर और एक पश्चिम की ओर था। पूर्व द्वार के सामने एक जलाशय सा दिखाई देता था उसके आस पास कुछ सुहावने वृक्ष खड़े हुए थे। मकान में लगभग तीन या चार कमरे थे। उस मकान में एक परम् तेजस्वी ब्राह्मण और एक दिव्य देवरूपा देवी दिखलाई दी। श्री गणपति जी ने बतलाया कि यही तुम्हारा पूर्व जन्म का गाँव है यही तुम्हारा घर है और यह तेजस्वी ब्राह्मण तुम्हारे पिता हैं और यह तुम्हारी माता है। श्री मुलखराज जी जिस समय अपने पूर्व जन्म के दृश्य को देख रहे थे उस समय उनको अपने इस जन्म की सुध बुध बिल्कुल भूल गई थी। उन्होंने अपने आप को भी उस पूर्व जन्म की आकृति में देखा।

अपने पूर्व जन्म के माता पिता को ही माता पिता जाना पूर्व जन्म के भाई बहिनों को ही भाई बहिन जाना और अपने पूर्व जन्म के गाँव के मित्रों को मित्र जाना। वह ध्यान दृष्टि से बार बार अपने पूर्व जन्म के घर में जाते थे और आते थे जिस समय इनको पूर्व जन्म की स्मृति भंग हुई तो श्री गणपति जी से प्रश्न किया कि महाराज मेरे माता पिता अब कहाँ हैं। मैं यह जानना चाहता हूँ मेरे उस जन्म वाले मातापिता इस समय कहाँ बास

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

करते हैं। श्री गणपति जी ने उसी समय हाथ का इशारा करते हुए श्री प्रभुजी की ओर बतलाया यही तुम्हारे पूर्व जन्म के पिता हैं। जिस समय श्री माता जी को जानने की इच्छा हुई तो श्री माताजी का दर्शन एक देव लोक में कराया उनका वर्ण बहुत उज्वल गौर व तेजोमय था।

शरीर मान काफी लम्बा था। बहुत मृदु भाषिणी थीं। श्री माताजी ने देव लोक से ही इन्हें आर्शीवाद दिया इसके अतिरिक्त और कई प्रकार के दृश्य ध्यान में श्री मुलखराज जी महाराज ने देखे। इन्हीं आठ दिनों के अन्दर श्री गणपति जी के दर्शन हर समय खुली आँखों और बन्द आखों उन को होते रहे। आठ दिन के बाद जिस समय श्री प्रभुजी ओकाड़ा मण्डी से लौट कर आये तो श्री प्रभुजी ने श्री मुलखराज जी की ओर मुस्कराते हुये देख कर कहा "कहो बेटा तुम्हारे प्रश्नों का जबाब तुम्हें मिल गया है ?" श्री प्रभुजी के दर्शन पाते ही श्री मुलखराज जी ने साष्टांग दण्डवत् प्रणाम की और प्रार्थना की हाँ प्रभुजी आपने अपने भटकते हुए बालक को पकड़ लिया है। श्री मुलखराज जी के अत्यन्त विनययुक्त शब्दों को सुन करके श्री प्रभुजी ने करुणा कर उनको कन्ठ से लगा लिया और हार्द दीक्षा देकर के एक दम तुरीय स्थिति प्रदान करदी जिससे उनका वर्षों तक बना रहने वाला मस्ती जंसा नशा सामान्य रूप से बना रहने लगा इसी नशे के विषय में अनुभवी लोगों ने वाणियें लिखी हैं।

गुरु नानक देव ने कहा है, "नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिनरात," यह स्थिति इनकी इस प्रकार की थी जिसमें यह बिल्कुल बाह्य ज्ञान से शून्य रहते थे। स्थिति में जिसके लिये जो जैसा शब्द निकल गया वह अमिट होगया।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

तुरीय स्थिति की दिव्य घटनाएँ

श्री मुलखराज जी महाराज इस मस्ती के नशे में इस प्रकार झूमते झामते चलते थे जिसमें उनको बिल्कुल वाह्य ज्ञान नहीं रहता था, किन्तु एक बड़ा भारी आश्चर्य था और वह यह कि जिस समय वह अमृतसर के कर्मों ड्योढी व हाल बाजार आदि बड़े-बड़े बाजारों से निकलते थे उस समय भी किसी मोटर, ताँगा, रिक्शा व साधारण मनुष्यों से भी उनकी भिड़न्त नहीं होती थी। एक बार भाई श्री ब्रह्मचारी गोपालानन्द श्री प्रभुजी के साथ चल रहे थे उधर दाहिनी ओर श्री मुलखराजजी महाराज चल रहे थे उस समय श्री ब्रह्मचारी जी ने श्री प्रभुजी से पूछा कि प्रभुजी यह क्या बात है श्री भाई जी की आँखें बिल्कुल बन्द रहती हैं और ऐसी स्थिति में भी यह सभी मोटर तांगों रिक्शों से बचकर निकल जाते हैं और इस स्थिति में क्या आनन्द है। श्री प्रभुजी ने उनका जवाब दिया, "बेटा इसको जो आनन्द है उसको तो यही जानता है। यह आनन्द बतलाने में वाणी का विषय नहीं है।

"ज्यों गूँगा गुड़ खाय है,
सैननि स्वाद सराहि।"

जिस आनन्द को किसी ने अभी तक देखा ही नहीं जो हर किसी को उपलब्ध भी नहीं है उस आनन्द का वर्णन जीभ क्या करके बतलायेगी। दूसरी बात तुमने पूछी है कि इनकी भिड़न्त क्यों नहीं हो जाती सो इसको ले जाने वाला ड्राइवर सर्व शक्तिमान है जो सभी का उर प्रेरक है। इसलिये ऐसी

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

स्थिति में कभी भी भिडन्त नहीं हुआ करती और नहीं ऐसी स्थिति में पहुँचे हुए योगी को कोई किसी प्रकार का नुकसान पहुँचा सकता है।

समाधि परिणाम वाले योगी की वृत्ति जहाँ-जहाँ पहुँचती है वहाँ-वहाँ वह तद्रूप हो जाता है और तद्रूप होने पर उसकी वह शक्तियाँ हर समय उसका साथ दिया करती हैं। समाधि का अर्थ है "समाधि समतावस्था जीवात्म परमात्यन:" अर्थात् :—जीवात्मा और परमात्मा की बिल्कुल अभिन्नावस्था को समाधि कहते हैं। भगवान पातंजलि देव जी के शब्दों में समाधि का अर्थ है।

"तदेवार्थमात्र निर्भासं स्वरूप शून्य" "मिव समाधि"

अर्थात्—योगी जिसका ध्यान करता है वही भासित होता रहे अपना स्वरूप भी शून्यवत् हो जाये अर्थात् अपना स्वरूप ज्ञान न होकर लक्ष्य का ही स्वरूप ज्ञान हो योगी यह समझे कि वह मैं ही हूँ तो समझ लेना चाहिये कि समाधि शब्द उसके लिए क्रियान्वित है। श्री मुलखराजजी महाराज इस ही स्थिति में हर समय रहते थे। वह चलते-फिरते उठते बैठते देखते थे कि वह भगवान विष्णु के चतुर्भुज स्वरूप में विलीन हो रहे हैं। कदाचित् उनकी समाधि परिणाम वाली मनोवृत्ति भगवान शिव की ओर चली गई तो उन्होंने देखा :—

"शिवोऽहम् शिव: केवलोऽहम्"

अर्थात् :—मैं शिव हूँ केवल सदाशिव मैं ही हूँ। एक बार इसी तुरीय स्थिति में बन्द आँखों में अमृतसर में गुरुबाजार से होते हुए श्री मुलखराजजी कहीं घंटाघर की तरफ जा रहे थे। उस स्थिति में जाते हुए श्री बहन द्रौपदी देवी जी ने उनको देखा

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

तो दीखा कि वह साक्षात सदाशिव हैं। उनके तीसरे नेत्र से महान प्रकाश निकल रहा है। तीसरे नेत्र का वह प्रकाश जिस किसी जीव पर पड़ गया वही सफल मनोरथ हो गया। श्री बहन द्रोपदी देवी जी उस समय तक श्री प्रभुजी के चरणार बिन्दों में नहीं आईं थीं।

उन्होंने उनको शिव रूप में देखकर के मन में बड़ा आश्चर्य माना और कहने लगी, इन महापुरुष को देखना चाहिये यह कौन है यह मनुष्य है या इस रूप में स्वयं सदाशिव है। श्री बहन जी श्री मुलखराज जी महाराज के पीछे चलती रहीं और जोगों से पूछती रहीं कि यह कौन महापुरुष हैं या इस देश में छुपे हुए स्वयं भूतनाथ सदाशिव भगवान् शंकर हैं। लोगों ने श्री मुलखराज जी महाराज का परिचय देते हुए बतलाया कि यह योग-योगेश्वर प्रभु श्री रामलाल जी महाराज के पूर्ण कृपापात्र शिष्य हैं। श्री प्रभुजी की इस अलौकिक कृपा को देख करके बहन श्री द्रौपदी जी अत्यन्त प्रभावित हुई व श्री कृपानिधि प्रभुजी के चरण कमलों में जाकर के चरण शरण ग्रहण करली वैसे तो श्री मुलखराज जी महाराज का जीवन सारा ही योग मय रहा है किन्तु इस तुरीय स्थिति में जबकि उनकी आँखें बन्द रहती थीं तब भी प्रायः अद्भुत घटनायें घटती ही रहती थीं।

———

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

उड्यान गति द्वारा पहाड़ से नीचे आना

एक बार श्री प्रभुजी श्री मुलखराज जी को व श्री गोपाला नन्द जी को साथ लेकर के आंकड़े के पहाड़ पर गये। साथ में और भी बहुत से गृहस्थ शरीर थे। अन्य साथ में जाने वाले सत्संगी लोगों ने जब इन दोनों की ऐसी दशा देखी कि पल-पल में मूर्छित हो जाते थे और शरीर चेतना हीन होकर जड़वत पत्थर की तरह गिर जाते थे, लोगों ने श्री प्रभुजी से प्रार्थना की कि प्रभो आप ले तो आये हैं किन्तु पहाड़ से नीचे कैसे उतारेंगे तो श्री प्रभुजी हँसे और कहा कि भाई यह तुम लोगों से पहले जायेंगे और कोई नुकसान भी होगा नहीं। लोगों ने श्री प्रभुजी से प्रार्थना की महाराज हम यह देखना ही चाहते हैं कि यह लोग पागलों जैसी स्थिति में रहने वाले कैसे पहाड़ से नीचे उतर जाते हैं। लोगों की इस हार्दिक भावनाओं को देख कर श्री प्रभुजी ने कहा कि अच्छा अभी हम तुम्हारे सामने नीचे उतार देते हैं। ऐसा कह कर श्री प्रभुजी ने दोनों को खड़ा कर लिया और निर्दय भाव से गर्दन पकड़ करके पहाड की चोटी से नीचे को धकेल दिया सभी लोगों ने देखा कि श्री गोपालानन्द जी दादुरी वृत्ति से नीचे जा रहे हैं और श्री मुलखराज जी उड्यान गति से नीचे जा रहे हैं। लोग सभी पहाड़ा पर ही खड़े थे सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ और लोग धन्य-धन्य कहने लगे।

———

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ब्रह्मपुरी के जंगल में चीते का दर्शन और प्यार

एक बार श्री प्रभुजी ऋषिकेश योग साधन आश्रम से ब्रह्मपुरी के जगल में भ्रमण करने के लिये गये। ज्यों ही ब्रह्मपुरी के जगल में पहुँचे और सग में जाने वाले सभी घूमते हुए आगे बढ़ने लगे तो इतनी देर में क्या देखा, सामने से खूँख्वार चीता भागता हुआ आ रहा है। जिसको देख करके सभी सत्सगी डर गये और प्रार्थना करने लगे कि प्रभुजी इससे आज कैसे जीवन बचेगा। श्री प्रभुजी ने आदेश दिया कि डरोमत यह चीता तुम्हें कुछ नहीं कहेगा अपना आहार खाकर व जल पीकर के वापस लौट जायेगा। श्री मुलखराज जी महाराज उस समय श्री प्रभुजी के साथ थे और उनकी तुरीय स्थिति चल रही थी। नेत्र कुछ अर्द्धोन्मीलित से रहने लग गये थे। ऐसी हालत में श्री प्रभुजी ने श्री मुलखराज जी से कहा कि— बेटा देख तो यह क्या आ रहा है। "श्री मुलखराजजी ने थोड़ी सी दृष्टि उठाई और उस चीते की ओर देख कर कहा। प्रभुजी यह आपका बच्चा ही तो है। यह कहते कहते श्री मुलखराज जी ने चीते को पकड़ लिया और उससे प्यार करने लगे। चीते के मन के अन्दर भी कोई द्वेष नहीं दिखाई दिया। वह उनके प्यार को पा करके स्वेच्छा गति से लौट गया व किसी से कुछ नहीं कहा। भगवान पातञ्जलि देव ने इसी सिद्धान्त का योगदर्शन के अन्दर खुले शब्दों में प्रतिपादन किया है।

"अहिंसा प्रतिष्ठयां तत्संन्निधौ वैर त्यागः।

अर्थात—जिस योगी की अहिंसा में पूरी प्रतिष्ठा हो जाती है उसके प्रति प्राणीमात्र वैर छोड़ देता है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

श्री मुलखराज जी महाराज वर्षों तुरीय स्थिति में रहे। वह सब क्रियायें करते हुए भी देहाभास रहित रहा करते थे। लगभग ८ महीने तो बिल्कुल ही बाह्य चेतना शून्य रहे। ऐसी स्थिति में सभी प्रकार के विषैले जन्तु भी इन पर अपना कोई प्रभाव नहीं डालते थे। सर्प बिच्छू आदि अंग में लिपट जाते और फिर अपनी स्वभाविक गति से उतर कर चले जाते। श्री मुलखराज जी की यह स्थिति जब अनवरत बनी ही रहने लगी तो उनके घरवालों को बड़ी चिन्ता हुई। उन्होंने श्री प्रभुजी के चरणारविन्दों में आकर प्रार्थना की—महाराज यह ही हमारा बड़ा लड़का है और ये ही नशैयों की तरह से दिन रात पड़ा रहता है। हमारा कोई भी कार्य व्यवहार नहीं चलता इसलिये कृपा करके इसकी इस स्थिति में परिवर्तन कीजिये जिससे कि यह अपना भजन ध्यान करता हुआ दुनियावी व्यवसाय में भाग ले सके। यद्यपि योग-योगेश्वर श्री प्रभुजी की यह इच्छा बिल्कुल नहीं थी कि वह श्री मुलखराज जी को यत्किञ्चित भी बहिर्मुखता की ओर ले जायें किन्तु उनके घरवालों के अतिशय अनुरोध करने पर श्री प्रभुजी ने उनकी प्रार्थना को स्वीकार कर लिया और आज्ञा दी कि—अच्छा कल से मुलखराज तुम्हारे घर के सब काम करेगा किन्तु आँखें उसकी बन्द ही रहेंगी। तुम्हारे किसी भी कार्य व्यवहार में हानि नहीं हो सकेगी। काम सब बराबर चलते रहेंगे। श्री प्रभुजी के आदेश को पाकर श्री मुलखराज जी के पिताजी ने प्रार्थना की कि महाराज बन्द आँखों में यह मुलखराज दुकान पर क्रय विक्रय का कार्य कैसे कर सकेगा। और इसकी आँख बन्द रहते हुए किसी प्रकार का नुकसान हो गया तो इसका जिम्मेवार कौन बनेगा। श्री प्रभुजी ने उत्तर दिया, "कोई चिन्ता

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मत करो इससे किसी भी प्रकार का नुकसान हो गया तो उसके जिम्मेवार हम होंगे। श्री प्रभुजी के बार-बार ऐसे आज्ञा प्रदान करने पर श्री मुलखराज जी के पिता उनको अपने साथ ले गये और दुकान पर सौदा बेचने के लिये बैठा दिया। वह भी श्री प्रभुजी की आज्ञानुसार क्रय विक्रय आदि सभी कार्य करने लगे।

———

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

दुकान पर अखंड समाधि व माता को दर्शन

श्री प्रभुजी की परम् अनुकम्पा से दुकान का सभी कार्य भार श्री मुलखराज जी ने सँभाल लिया। जिस दिन से श्री मुलखराज जी दुकान पर बैठे उसी दिन से दुकान की आय दसौगुनी अधिक बढ़ गई। श्री मुलखराज जी से सभी कुटुम्बी यह भली प्रकार से समझ गये यह सब कुछ श्री प्रभुजी की परम् अनुकम्पा का ही फल है। एक दिन प्रात काल के समय श्री मुलखराज जी की माता जी दुकान पर आईं। उन्होंने आकर देखा कि उनके पुत्र श्री मुलखराज जी बिल्कुल निश्चल भाव से बैठे हुये हैं और उनकी अखंड समाधि लगी हुई हैं। उनके सिर पर एक चूहा चढ़ा हुआ है और दो पैर के बल खड़ा होकर के कभी-ऊपर सामने देखने लगता है और कभी इधर उधर घूमने लगता है, किन्तु श्री मुलखराज जी को इसका यत्किंचित भी बोध नहीं हैं। अपने पुत्र की इतनी ऊँची स्थिति को देखकर के उनकी माता जी ने श्री प्रभुजी का परम् अनुग्रह माना और अपने बेटे को ही साक्षात शिव का रूप मान कर उनको बार बार नमस्कार किया।

श्री मुलखराज जी के पिता व उनके भाइयों के विचार आर्य समाजिक थे। वह लोग श्री मुलखराज जी की ऊँची समाधि स्थिति को देखते हुए भी इन पर विश्वास नहीं रखते थे। अतः ये लोग इस आशा में थे कि मुलखराज जी के व्यापार कार्यों में कोई जुही निकले या किसी प्रकार की हानि दिखलाई दे तो यह लोग श्री प्रभुजी से जाकर कहें कि आज मुलखराज ने हमारा अमुक नुकसान किया, किन्तु श्री प्रभुजी की परम्

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अनुकम्पा से उनके भरसक छिद्रान्वेषण करने पर भी ऐसा कोई अवसर मिल नहीं पाया जिससे कि वह श्री मुलखराज जी की शिकायत कर सकें।

किन्तु जिस व्यक्ति को जैसी लगन होती है यदा कदा उसको वैसा संयोग मिल ही जाया करता है। यहाँ पर भी एक घटना इसी प्रकार की घटित हो ही गई जिससे वह लोग अपने मन में शिकायत करने के लिये उल्लसित हो उठे। यह लोग मन में यह सोचते भी थे कि भले ही हमारा कोई नुकसान हो जाय किन्तु एक बार हमे श्री मुलखराज जी के गुरुदेव योग-योगेश्वर प्रभुजी रामलाल जी के चरण कमलों में यह कह तो दें कि इस मुलखराज ने अपनी भजन समाधि में ही हमारा दुकान का इतना नुकसान कर दिया। सो ईश्वर इच्छा से उनको ऐसा ही एक असफल मंयोग मिला और वह इस प्रकार :—

———

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कुम्हारों पर कृपा

एक रोज श्री मुलखराज जी नित्य की भाँति ध्यान मुद्रा में पड़े हुये थे। ग्राहक लोग आते थे सौदा लेते थे चले जाते थे और कीमत पूरी-पूरी अदा कर जाते थे। एक रोज कहीं से कुछ कुम्हार लोग आये और उन्होंने दुकान पर आ करके थोक भाव से कुछ बिनौले खरीदे और अपने गधों पर लादकर के चुपचाप चल दिये। कुम्हारों ने अपने मन में यह अनुमान लगा लिया था कि यह लाला नशेई है रोज सोया पड़ा रहता है, इसको कीमत चुकाने की आवश्यकता ही क्या है ? सौदा खरीद ही लिया है तुम चुपचाप यहाँ से चले चलो। कुम्हारों ने अपने मन में इस प्रकार का विचार किया और तत्काल ही उस विचार को कार्य रूप में परिणत किया और वे लोग तत्काल वहाँ से चले गये। इधर श्री मुलखराज जी उसी प्रकार ध्यानस्थ पड़े थे। कहीं से उनके पिता ला० देवीदास जी और छोटे भाई घूमते हुए आये।

उन्होंने आकर पूछा कि भाई मुलखराज कुम्हार बिनौले खरीद कर ले गये हैं उसका रुपया कहाँ है। श्री मुलखराज जी ने उत्तर दिया कि कुम्हार वह रुपया नहीं दे गये। ज्यों ही श्री मुलखराज जी के मुख से यह उत्तर निकला त्यों ही उनके पिता और छोटे भाई ने अपने मन में दृढ़ विचार कर लिया कि आज श्री मुलखराज के गुरुदेव के चरण कमलों में जाकर कहेंगे कि महाराज हमारा इतना नुकसान हो गया है, वोह इस मुलखराज ने किया है अतः आप अपने वचनानुसार इस नुकसान

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

को पूरा कीजिये । इधर ये लोग ये विचार कर ही रहे थे तो इतनी देर में क्या देखा वही कुम्हार लौट कर हाथ बांधे हुए आ रहे हैं और गिड़गिड़ा कर यह कह रहे हैं कि हे लाला जी कृपा करके अपना रुपया ले लीजिये और हमें रसीद दीजिये, हम रुपया देना भूल गये थे, आपने मार-मार के हमारा नाश करा दिया, पता नहीं वो कौन आदमी है, लम्बे कद का, शरीर का रंग गौरवपूर्ण हैं । जिसको तुमने भेजा है उसने हमें बुरी तरह मारा और गधों को पीटकर भगा दिया, हम जान बचा करके मुश्किल से भाग कर आए हैं ।

जब तक तुम रसीद बनाकर नहीं दोगे तब तक वह आदमी हमें बिल्कुल निकलने नहीं देगा । इसलिये कृपा करके रसीद बना दो । रसीद तो बनाई, किन्तु साथ ही श्री मुलखराजजी का पिता और छोटा भाई विचार करने लगे कि हमने रसीद तो बना दी किन्तु कोई व्यक्ति तो हमने नहीं भेजा था जिसका ये कुम्हार नाम ले रहे हैं—वह आदमी कौन था ? कुम्हारों के कथनानुसार जब वहाँ जाकर देखा तो वहां पर कोई आदमी नहीं मिला । श्री मुलखराजजी अपने मन में पूरी तरह से समझ गये कि यह व्यक्ति श्री प्रभुजी के चरण कमलों के अतिरिक्त और कोई नहीं था । श्री प्रभुजी की इस अनुकम्पा को देखकर ये लोग भी भली प्रकार समझ गये कि ये लोग भी श्री मुलखराज को कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकते । किन्तु स्वाभाविक डाह इनके मन में बना ही रहा ।

शनैः शनैः इसी चिढ़ाचिढ़ी के अन्दर इनके मन में अधिकाधिक इर्ष्या श्री मुलखराज जी के प्रति बढ़ती चली गई । श्री मुलखराज जी का कोई छिद्र तो ये लोग नहीं पकड़ सके किन्तु उनको चिढ़ाने वाले कार्य वार बार करने लगे । ये कभी भी अवकाश

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पाते ही श्री प्रभुजी को अपवाद की बातें किया करते और मुखसे अपशब्द बोलते और सोते समय जिधर श्री प्रभुजी निवास करते थे उस दिशा को पैर करके सोते थे जिससे श्री मुलखराज जी के मन में चिढ़ उठे और दुःख हो। और वैसा ही हुआ भी। इनके दुर्व्यवहार से श्री मुलखराज जी बहुत ही अधिक में तंग आ गये और यह सोचने लगे कि मेरे शरीर के कारण ही मेरे पिता हैं।

इसलिये तुच्छ शरीर को मुझे त्याग देना चाहिये क्योंकि यह लाला देवीदास से पैदा है। न यह शरीर रहेगा और न यह निन्दा सुननी पड़ेगी। यह सब विचार करके श्री मुलखराज जी ने श्री प्रभुजी के चरणों में जाकर प्रार्थना की कि प्रभो मेरा पिता मुझसे बड़ा अन्याय करता है। और आपके श्री चरणों का बड़ा अपवाद करता है, यह सब कुछ मुझसे सहन नहीं होता, या तो कृपा करके मेरे पिता के स्वभाव को ही बदल दीजिये अन्यथा यह शरीर अब संसार में न रहे, यही अच्छा है। श्री मुलखराज जी की प्रार्थना को सुनकर के श्री प्रभुजी मुस्कराये और कहने लगे कि बेटा यह बात तुम्हारे लिये कुछ भी कठिन नहीं है। तुम आज ध्यान में बैठकर जब भी गणपति में लय होगे तो सिद्धि को आज्ञा दे देना कि वह तुम्हारे पिता के स्वभाव को बदल दे। बस इतना करने से तुम्हारे पिता का स्वभाव बिल्कुल बदल जायेगा और वह तुम्हें फिर कोई अपशब्द नहीं कहेगा।

———

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पिता पर कृपा व ध्यान दीक्षा

श्री प्रभुजी की उपरोक्त आज्ञा को पाकर के ध्यान द्वारा समाधिस्त होकर के श्री मुलखराज जी ने सिद्धि को आज्ञा दी कि तुम मेरे पिता के स्वभाव को आज ही बदल दो। सिद्धि को यह हुक्म श्री मुलखराज जी ने रात को लगभग १० वजे दिया उनके पिता उस समय गहरी नींद में सोये हुए थे। सिद्धि को आदेश देने के पश्चात् श्री मुलखराज के पिता को एक दिव्य स्वप्न हुआ और वह स्वप्न एक असाधारण स्वप्न था। श्री मुलखराज जी के पिता ने देखा कि आकाश मंडल में यहाँ प्रकाश छाया हुआ है उस प्रकाश में प्रणव की आकृति दिखाई देती है। प्रणव की आकृति में श्री प्रभुजी के दर्शन होते हैं और एक ध्वनि सुनाई देती है। ये ही वह निराकार ब्रह्म है जिनकी तुम उपासना करते हो। उस प्रकाश के अन्दर भिन्न-भिन्न वर्ण के हजारों देवी देवता आए जो श्री प्रभुजी पर पुष्प वर्षा कर रहे थे और पूजा कर रहे थे इस स्वप्न को देखकर श्री मुलखराज जी के पिता जग गये, उन्होंने देखा कि उनके अपने पैर उस ओर हैं जिस ओर श्री प्रभुजी रह रहे थे।

श्री मुलखराज जी के पिता को अपने पूर्व संस्मरण याद करके बड़ा पश्चाताप हुआ, उन्होंने उसी समय अपने पुत्र श्री मुलखराज जी को उसी समय जगाया और हाथ जोड़कर विनय पूर्वक कहा कि बेटा मुझसे बड़ी भारी भूल हुई जो मैं श्री प्रभुजी के स्वरूप को नहीं जान सका। वोह पूर्ण ब्रह्म हैं मैं एक साधारण जीव हूँ, उनकी महिमा बहुत वलक्षण है, तू मुझे

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

अभी उनके चरणों में ले चल जिससे में अपने अपराधों की क्षमा याचना करूँ और मैं भी शारण हो जाऊँ, जिससे मेरा कल्याण हो सके। श्री मुलखराज जी के पिता को दिन निकालना कठिन हो गया, वह रात्रि उनके लिये वर्षों की बन गई।

यथा तथा बड़ी कठिनता से सुवह के पांच बजे। व लाला देवीदास जी श्री मुलखराज जी को साथ लेकर श्री प्रभुजी के चरणारविन्द में पहुँच गये, लम्बा पड़कर दण्डवत प्रणाम किया व बार-बार क्षमा याचना की कि प्रभो ! आप सर्व समर्थ हैं, मुझ मूर्ख से बड़ी भारी भूल हुई जो अब तक आपके अपवाद में ही पड़ा रहा, और आपके इस बच्चे को व्यर्थ में सताप देता रहा। अब कृपा करके मुझे योग दीक्षा दीजिये जिससे मेरा भी कल्याण हो जाये। श्री प्रभुजी ने उसकी विनय को स्वीकार किया और उसे भी ध्यान दीक्षा दे दी। श्री मुलखराज जी का हृदय बहुत प्रसन्न हुआ कि उनका पिता सन्मार्ग पर आ गया किन्तु श्री प्रभुजी के मन में लाला देवीदास के शरण आने से कोई खुशी नहीं थी और नहीं कोई शोक था। प्रत्युत कुछ उदासीन ही रहते थे। श्री प्रभुजी की उदासीनता को देखकर श्री मुलखराज जी ने पूछा कि प्रभो मेरे पिता के शरण आने से आप कुछ उदासीन से रहने लगे इसका क्या कारण है।

श्री प्रभुजी ने उत्तर दिया कि बेटा कारण तो कोई नहीं है किन्तु तेरा पिता उस वस्तु का अधिकारी नहीं है जो तू ने उसे दिला दी है। वह इस शक्ति का अवश्य दुरुपयोग ही करेगा। एक दिन श्री मुलखराजजी ने ध्यान सामाधि में देखा कि उसका पिता श्री प्रभुजी के सामने हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रहा है कि प्रभो इस मुलखराज जी को हमारे बश में कर दो या इसका

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

यह शरीर जाता रहे। उसी समय श्री प्रभुजी ने श्री मुलखराज जी की ओर देखा और कहने लगे कि देख, हम पहले ही कहते थे कि यह इस वस्तु का अधिकारी नहीं है। श्री मुलखराजजी को भी अपने पिता से यह भाव जान कर बड़ा आश्चर्य हुआ और अपने मन को उनसे पहले की तरह उपराम बना लिया। श्री प्रभुजी ने भी लाला देवीदास के इस प्रकार के भाव देख कर उनको विशेष उत्कर्ष नहीं दिया व साधारण स्थिति में ही छोड़ दिया।

———

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

दृढ़तर अभ्यास व कुडग्लनी जागरण

श्री प्रभुजी के परमानुग्रह के बाद श्री मुलखराज जी के पिता, श्री मुलखराज जी के विरोधी तो नहीं रहे किन्तु विशेष अनुकूल भी न हो पाये। सामान्य भाव से रहते रहे। इनके रास्ते में किसी प्रकार की विशेष बाधा उपस्थित नहीं करते थे श्री मुलखराज जी को बहुत अच्छा सुअवसर मिल गया उन्होंने अपने अभ्यास को दृढ़तर बढ़ाना शुरू कर दिया। परिणामतः मूलाधार के अधिष्ठाता देव श्री गणपति जी के दिव्य दर्शन उनको प्रत्येक रोम रोम में अणु परमाणुओं में बने रहने लगे। जहाँ यह दृष्टि जमाते थे वहीं पर ऋद्धि सिद्धि सहित श्री गणपति जी नजर आते थे।

श्री मुलखराज जी को श्री आनंद कंद श्री प्रभुजी की परम् अनुकम्पा से इतनी सहज स्थिति उपलब्ध होगई कि बिना प्रयास के ही इनको सहज समाधि बनी रहने लग गई। इसी ध्यान योग में इनको बार बार भस्त्रिका कुंभक बनने लग गया। भस्त्रिका प्राणायाम के फलस्वरूप उनको सहसा कुंडलिनी जागरण हो गया इन्होंने ध्यान में देखा कि मूलाधार कमल में एक बड़ा भारी सर्प अपने लपेटे खोल करके मुख खोल करके सामने खड़ा है और वह बड़ा तेजोयुक्त है।

क्योंकि अब तक इस प्रकार का अनुभव कभी नहीं हुआ था इसलिये यह अनुभव क्या है इस प्रकार का बोध प्राप्त करने के लिये यह सारी घटना श्री प्रभुजी के चरणारविन्दों में कह सुनाई।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

श्री प्रभुजी ने यह अनुभव सुन करके इन्हें बार बार कंठ से लगाया और उत्तर दिया कि—बेटा यह तुम्हारे सुकर्म का फल है। यह महाशक्ति कुण्डलिनी सर्व शक्तियों की आधार भूता है इसी को सर्पिणी कहते हैं और इसका जागरण बड़ी कठिन तपश्चर्या और साधना के बाद हुआ करता है। प्रभु की परम अनुकम्पा से तुम्हें वह सहज में ही होगया है सो अपने अभ्यास को बराबर बढ़ाते चले जाओ। जिसमें तुम्हें अधिकाधिक लीनता प्राप्त होती चली जाये।

श्री प्रभुजी के उस आदेशानुसार श्री मुलखराज जी ने अपने अभ्यास को और भी अधिक बढ़ाना शुरू कर दिया और अपने मन को समझा करके उच्च ध्येय की प्राप्ति के लिये प्रयत्नशील हो गये।

———

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सहज समाधि एवं निर्भयता

श्री मुलखराज जी महाराज का अभ्यास इतना ऊँचा बढ़ता चला गया कि उनको सहज समाधि हर वक्त बनी रहने लगी और वह अकुतोभय हो गये।

जिन दिनों श्री मुलखराज जी की यह उच्चतम स्थिति चल रही थी उन्ही दिनों अमृतसर में एक जोरों का हिन्दू मुस्लिम दगा हुआ जिसमें जोरों का कत्लेआम हो गया था किन्तु श्री मुलखराज जी अपने मकान से श्री प्रभुजी के स्थान तक भीषण कत्लेआम के मौके में भी निर्द्वंद चले आया करते थे। जिस समय यह कटरा संतसिंह में पहुँचते तो कटरे वाले लोग भीतर से खिड़कियाँ और दरवाजे बन्द किये मिलते उनको यह भय रहता था कि मुसलमान लोग अन्दर घुस कर लूट मार न करें किन्तु श्री मुलखराज जी ऐसी स्थिति में भी दरवाजे के सामने खड़े हो जाते थे।

लोगों के मन में स्वाभवतः दया पैदा होती और वह जल्दी से खिड़की खोल कर इन्हें भीतर कर लिया करते थे। एक रोज कुछ लोगों ने मिलकर के श्री प्रभुजी से भी यह प्रार्थना की कि प्रभो ! कृपा कर कुछ दिन इन्हें यहाँ आने से रोक दें क्योंकि इस प्रकार से इनको यहाँ आने में इनको भी खतरा है और हम सब को भी हो सकता है। श्री प्रभुजी ने उन लोगों की प्रार्थना को मान लिया और साथ ही उनको भी समझा दिया कि भाई यह ऐसी स्थिति से निकल रहा है जिसमें कोई भय होगा नहीं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ध्यानावस्था के विशेष अनुभव

योग दर्शन में एक सूत्र आता है :—

"भुवनज्ञानं सूर्येसंयमात् ।" सूत्र का अर्थ है :—यदि योगी सूर्य में संयम करे तो उसको भुवन का ज्ञान होता है । इस सूत्र पर व्यास जी महाराज ने भाष्य लिखा है कि योगी को चाहिये कि आत्म साक्षात्कार से पहले अतल, वितल तलातल रसातल पाताल व महाताल आदि नीचे के लोक व भूः, भुवः स्वः महः जनः तपः और सत्य आदि सब ऊपर के लोकों को पूर्ण प्रत्यक्ष करले ताकि उसके मन में ऐश्वर्योपभोगों की कोई कामना बाकी न रह जाय । इसी नियम के अनुसार श्री आनन्द कंद श्री प्रभुजी अपने बालकों को स्वर्ग आदि के ऐश्वर्यों को प्रत्यक्ष ध्यान-समाधि में दिखा दिया करते थे ।

इसी के अनुसार श्री मुलखराज जी महाराज को भी प्रायः सभी लोक लोकांतरों के उत्तमोत्तम दृश्य श्री प्रभुजी ने दिखला दिये थे । एक बार ध्यानावस्था में मुलखराज जी के मन में एक प्रश्न पैदा हुआ और वह यह था कि सद्गुरु तत्व क्या चीज है । सद्गुरुदेव की जाति में ब्रह्मा विष्णु शिव सब का विलय हो जाता है । इसलिये उन्होंने ध्यान में श्री प्रभुजी से प्रार्थना की प्रभो ! मैं सद्गुरु तत्व को देखना चाहता हूँ । श्री प्रभुजी ने उनको दिखलाया—वह तत्व प्रणव है । उन्होंने श्री प्रभुजी के परम् दिव्य चेतन स्वरूप को देखा उनका सारा शरीर तेज और श्वेत वर्ण की रोशनी से बना हुआ था ।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

उन्होंने फिर देखा तो उनका वही स्वरूप दिव्य तेजोमय विष्णु स्वरूप था। उसके बाद फिर देखा तो वही शिव रूप था। अन्त में देखते देखते यह देखा कि ब्रह्मा विष्णु शिवात्मक वही नित्य चेतन प्रकाश था। गुरुदेव के शरीर से जो तेज की किरणें निकल रहीं थीं, उन एक एक किरण के अन्दर अनेकों अण्ड व ब्रह्मांड दिखाई दिये। अनेकों ब्रह्मा विष्णु शिव दिखालाई दिये। वेद उसी नित्य शुद्ध स्वरूप की स्तुतियें गा रहे थे। अन्त में यह सब देख करके उसी स्वरूप को प्रणव रूप देखा और अन्त में प्रणव रूप होकर के वहीं अखंड तेज सभी अन्ड ब्रह्मांडों में व्यापक हो गया। सद्गुरुदेव के इस महा दिव्य स्वरूप को देख कर श्री मुलखराज जी का मन आनन्द विभोर हो गया और उन्होंने अपने मन में भली प्रकार जान लिया :—

'नास्ति तत्वं गुरोपरम्।'

———

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

चित्त निर्माण की योग्यता व अस्मितानुगत योग

एक बार श्री मुलखराज जी महाराज ने ध्यान में श्री प्रभुजी से पूछा प्रभो ! आप हर व्यक्ति को हर जगह किस प्रकार से दर्शन देते हैं और यह क्या शक्ति है। श्री प्रभुजी ने उनको उत्तर में समझाया कि—बेटा जो साधु वशीकार संज्ञा वैराग्य को प्राप्त होकर ऊँचा उठ जाता है और अखंड मण्डलाकार विश्वव्यापक रूप को देखते हुए वह प्रकाशित स्वरूप अपना ही भासित होता है, उसको अस्मितानुगत योग कहते हैं। कोई भाग्यवान् जीव ही इस योग का पूर्णाधिकारी होता है। ऐसा व्यक्ति 'ऋतम्भरा' प्रज्ञा" का अधिष्ठान बन जाता है और उसको चित्त बनाने की योग्यता आजाती है। देखो ! तुम अपने चित्तों को बनते हुए देखो।" श्री प्रभुजी के ऐसे आदेश देने के बाद श्री मुलखराज जी ने अपने एक चित्त से अनेक चित्तों को बनते हुए देखा। उनके प्रधान चित्त से धुँए की तरह कुछ तेजांश उठता था और उसी से एक अलहदा चित्त तैयार हो जाता था।

इस प्रकार उन्होंने अपने एक चित्त से अनेक चित्तों को बनते हुए देखा। इसी प्रकार श्री प्रभुजी के नित्य विग्रह से अनेकों निर्माणित चित्त बनते देखा। मालूम यह हो रहा था श्री प्रभुजी के अपने शरीर से अनेकों प्रभुजी बन बन करके न्यारे होते जा रहे हैं। और वह सभी स्वरूप भिन्न-भिन्न भक्तों के पास चले गये हैं। जिस समय श्री मुलखराज जी देख रहे थे कि उनके साथ उनके अपने शरीर भी अनेकों जगह बट गये हैं। इसी को चित्त निर्वाण भी कहते हैं। श्री प्रभुजी ने उनको समझाया—बेटा इसी का नाम चित्त निर्वाण हैं और इसी प्रकार अपने निर्माणित चित्त द्वारा योगी भिन्न-भिन्न जगहों पर जाया करते हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सिद्धों की पहचान

एक वार श्री प्रभुजी श्री मुलखराज जी व अन्य सभी सत्संगियों को लेकर के सन् १९२६ में हरिद्वार कुंभ मेले पर आये। कुंभ मेले में हजारों जटाधारी महात्मा आये थे उनमें से ये पहचान नहीं की जा सकती थी कि कौन कौन महात्मा अच्छी पहुँच वाले आये हैं।

बाहरी वेश भूषा से सब सामान्य ही दिखाई देते थे। यह प्रश्न श्री प्रभुजी से श्री मुलखराज जी महाराज ने ध्यान में किया कि प्रभो! यह कैसे पहचान की जा सकती हैं कि इनमें से कौन महात्मा कितनी पहुँच वाला है। श्री प्रभुजी ने उत्तर दिया—बेटा जिस जिस की जैसी उपासना होती है उतना उतना ही उस व्यक्ति का तेजो मण्डल बढ़ता ही चला जाता है। तेज पुञ्ज की उपासना से मनुष्य का तेज बढ़ता है और अन्यान्य उपासनायें करने से वही तेज लालिमा और कालिमा को लिये, हुए दिखलाई देता है। सो इस कुंभ मेले में जितने महात्मा आये हैं, उनको तुम ध्यान दृष्टि से उनके सूक्ष्म शरीर के तेजो मण्डल को देखो कि उनके सिर के आस पास कितना तेज मण्डल है।

श्री प्रभुजी के उपदेशानुसार कुंभ मेले में आने वाले तेजो मण्डल को देखना आरम्भ किया तो उन सभी साधुओं में केवल भाग चार ही इस प्रकार के सिद्ध पुरुष दिखलाई दिये कि जिनका तेज मण्डल देश भर में फैला दिखलाई देता था।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

उसके बाद श्री मुलखराज जी ने श्री प्रभुजी के तेज मण्डल को देखना प्रारम्भ किया तो उनके तेज का आदि अन्त न पा सके। अन्त में श्री प्रभुजी ने उनको उठा दिया और लाड़ व प्रेम में कहा—बेटा हमसे ही उपाय पूछा और हमारा ही इम्तहान लेना शुरू कर दिया।

———

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

एक सिद्ध महात्मा से मिलाप

श्री मुलखराज जी महाराज इसी तुरीय स्थिति में लाहौर शहर से निकल रहे थे तो श्वासों प्रश्वासों की गति से उनको किसी महापुरुष का आकर्षण मालूम पड़ा। गति अवरोध न देख करके श्री मुलखराज जी उसी ओर चल पड़े। थोड़ी देर बाद उन्होंने देखा कि महा तेजो मण्डल युक्त एक महात्मा उनको आकर्षित कर रहे हैं। थोड़ी दूर आगे चलने पर वही महात्मा उनके सामने आ गये। श्री मुलखराज जी ने हाथ जोड़ कर विनय की महाराज आपने मुझे क्यों याद किया है।

महात्मा जी ने जवाब दिया है—बेटा कई जन्म पूर्व तुम मुझे मिले थे। उस समय हमने एक बार फिर मिलने का वायदा किया था वह वचन अब तक शेष था उसकी पूर्ति के लिये हम तुम्हारे पास आये हैं। तुम्हें पूर्ण पुरुष मिल गये हैं चिंता मत करो अब तुम कृतार्थ हो चुके हो। कुछ दिन के संस्कार चक्र के भुगतान के बाद वह तुम्हें महर्षियों में महर्षि बना कर बैठायेंगे। श्री मुलखराज जी को उस महात्मा के मिलने से बड़ा आनंद आया और पूर्व स्मृति जो उन्होंने याद दिलाई थी उस सस्कार को श्री मुलखराज जी ने भली प्रकार से पहचान लिया व ध्यान मग्न हो गये।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पत्नी का देहावसान व स्वर्ग्य गति

श्री मुलखराज जी गृहस्थ आश्रम में रहते हुए भी हमेशा सहज समाधि में स्थित रहते थे। योगी के लिये एक इस प्रकार की उक्ति है :—

यस्मिन् देशे वसेद्योगी ध्यान योग विचक्षणः
सोपि देशो भवेत्पूतः किम् पुनस्तस्य बान्धवः

अर्थात्ः—जिस स्थान में एक ध्यान योगी वास करता है वह देश का देश पवित्र हो जाता है और उस योगी के निकट सम्पर्क में रहने वाले अन्य बन्धु बान्धवों का तो कहना ही क्या है। श्री मुलखराज जी महाराज को परम् करुणार्णव योग-योगेश्वर श्री प्रभुजी ने जिस दिन से ग्रहण किया उसी दिन से समाधिस्थ बना दिया था। उनके सम्पर्क में जो जो व्यक्ति आते रहे वह अनेक प्रकार के लोक व परलोक के लाभ उठाते रहे। देवी मोहनकौर उनकी सहधर्मिणी थी। ऐसी स्थिति में उनके शरीर सम्पर्क से उसके शरीर में क्या परिवर्तन नहीं आया होगा।

"कालोहि दुरातिक्रमाः" संसार चक्र का यह नियम है शरीर सभी के अनित्य हैं और नश्वर हैं। समय आने पर शरीर का योग वियोग होता ही रहता है। जीवात्मा अपने कर्म विपाक के अनुसार शुभा-शुभ फलों को प्राप्त करता है किन्तु योगी को चाहिये कि वह किसी भी कर्म फल के अन्दर आसक्ति न रक्खे। योगियों के कर्म न पाप के और न पुन्य के केवल मात्र कर्त्तव्य

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

बुद्धि से किये जाने वाले होते हैं। मुलखराज जी महाराज की पत्नी किसी शारीरिक कर्म विपाक वश असाध्य बीमार हो गई। उसकी इस स्थिति को देख करके श्री मुलखराज जी के मन में कुछ मनोमालिन्य के भाव जगे।

श्री प्रभुजी ने जब उनके मन की ऐसी हालत देखी तो कहा—बेटा शरीर का योग वियोग तो होता ही रहता है यह तुम्हारे पास बहुत लम्बे समय तक तो कायम नहीं रह सकेगी किन्तु चिन्ता मत करो यदि तुम्हारा मन इस समय इसके आकस्मिक वियोग से दुःख अनुभव करता है तो अब ये ठीक हो जायेगी किन्तु इसके शरीर से बहुत लम्बी आशा नहीं रखनी चाहिये। श्री प्रभुजी के ऐसे कहने से उस समय वह देवी बिल्कुल ठीक हो गई किन्तु लगभग ६ महीने या वर्ष दिन निकल जाने के बाद होतव्यता होकर रही। उस देवी का शरीर वियोग हो गया। श्री मुलखराज जी की सहधर्मिणी होने के नाते वह देवी कितनी पुण्यात्मा थी इसका तो वर्णन ही किया नहीं जा सकता। श्री परम् करुणार्णव प्रभुजी ने परमानुग्रह करके परमगति दी।

श्री प्रभुजी के उपदेशानुसार श्री मुलखराज जी ने भी पत्नी के वियोग से अपने मन को स्खलित नहीं होने दिया किन्तु जब देवी मोहनकौर के कुटुम्बी लोग करुणा क्रन्दन से रोते हुए आये तो श्री मुलखराज जी को भी अपनी सहधर्मिणी का वियोग अनुभव हुआ और उनकी आँखों से कुछ आँसू निकले। हमारे भारतीय रीति रिवाज में धर्म शास्त्रों के सिद्धांतानुसार मृत्यु के लिये रोना मरने वाले के लिये अशुभ माना जाता है किन्तु वह रोना स्वाभाविक होता ही है। श्री मुलखराज जी महाराज के कुछ आँसू निकले। सहज समाधि तो उनकी थी ही। क्या देखते

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हैं कि उनके सामने एक बहुत बड़ा दिव्य सिंहासन आया। वह सिंहासन अपने प्रकाश से स्वयं प्रकाशित था, देवी का रूप भी दिव्य प्रकाशमय था। सिंहासन में बैठी हुई वह देवी हाथ जोड़े हुए सामने आई। हाथ जोड़ कर प्रार्थना की स्वामी जी आपके कारण श्री प्रभुजी ने मुझे वह लोक दिया है देखो तो। वह कितना तेजस्वी लोक है।

किन्तु आपके आँसू उस दिव्य लोक से मुझे यहाँ खेंच लाये हैं। श्री मुलखराज जी ने जिस समय अपनी सहधर्मिणी की यह बातें सुनी तो प्रसन्न मन से आज्ञा दी और आशीर्वाद दिया अच्छा तुम इस पुन्य: की पात्रा हो यदि मेरा तन मन उन कृपा सागर जी की चरण धूलि हैं तो तुम दुबारा उसी लोक को चली जाओ और वहाँ जाकर परम् सुख को प्राप्त होवे। श्री मुलखराज जी के उस प्रकार कहते ही दिव्यसिंहासन पर आरूढ़ा वह देवी पुन: उसी तेजोमय लोक को चली गई। इधर क्या हुआ श्री मुलखराज जी ने देखा श्री प्रभुजी दिव्य तेजोमय रूप से सामने हैं।

श्री प्रभुजी ने कहा—बेटा देख हमारी ओर हम कौन हैं श्री मुलखराज जी ने उत्तर दिया प्रभो ! आप सर्वशक्तिमान मेरे गुरुदेव हैं। फिर आवाज आई फिर देखो ! अब हम क्या हैं। प्रभो ! इस समय आप दिव्य तेजोमय स्वरूप से चतुर्भुजी विष्णु हैं। फिर देखो—प्रभो ! इस समय आप प्रकाशमय स्वयं सदा शिव हैं। फिर देखो—प्रभो ! इस समय आप केवल अखंड मण्डलाकार अखंड तेज हैं। इस अखंड तेज में आपका नाम व रूप दिखलायी नहीं देता। श्री प्रभुजी ने आज्ञा दी—बेटा तुम अपने आपको देखो। उत्तर दिया प्रभो ! मैं मुलखराज हूँ। फिर आवाज आई-फिर देखो तुम क्या हो। उत्तर दिया

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

प्रभो ! मैं भी एक तेज राशि हूँ। फिर आवाज आई—फिर देखो। उत्तर दिया प्रभो ! मेरा भी नाम रूप आपके इस अखंड तेज में दिखलाई नहीं देता। केवल मात्र सर्वव्यापक अखंड आत्मा आप ही आप व्याप्त हो रहे हैं।

श्री प्रभुजी ने फिर कहा—बेटा अब बतलाओ इस प्रकाश में तुम्हारी स्त्री कहाँ हैं। उत्तर दिया प्रभुजी कहीं नहीं। तुम्हारे माँ बाप कहाँ हैं उत्तर दिया कहीं नहीं। अमृतसर और लाहौर तुम्हारे शहर कहाँ हैं। उत्तर दिया प्रभुजी ! कहीं नहीं। केवल मात्र हे ! अविनाशी आप ही आप सर्वत्र व्यापक हो रहे हो। श्री प्रभुजी ने उत्तर दिया—बेटा मेरा यह वह अभिनाशी धाम हैं जिसमें तू है न मैं हूँ कोई स्त्री है न पुत्र हैं। लोक परलोक शहर नदी गाँव कुछ भी नहीं है। इसको पाकर के मनुष्य जन्म मरण के चक्कर से पार हो जाता है और वह अक्षय सुख को पा जाता है।

———

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

एक-एक पग पर दस दस हजार अश्वमेध यज्ञ का फल

एक बार सद्गुरुदेव योग योगेश्वर प्रभु श्री रामलाल जी महाराज ऋषिकेश में विराजमान थे, किसी सांसारिक व्यक्ति ने आकरके उनके चरणारविन्दों में प्रश्न किया कि प्रभो ! सुनने में आता है कि मनुष्य की कोई स्थिति इस प्रकार की आया करती है कि उस स्थिति में यदि वह एक एक कदम आगे चला जाये तो उसको दस-दस हजार अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त हो जाता है वह स्थिति कौन सी है जिसको पाकर के मनुष्य इतना महान पुन्य का भागी बन जाता है।

उस समय श्री मुलखराज जी महाराज श्री प्रभुजी के चरणारबिन्दों में बैठे थे। इनकी ओर देख करके श्री प्रभुजी ने आज्ञा दी—बेटा ध्यान में देखकर बतलाओ कैसी स्थिति में जाकर मनुष्य एक-एक कदम बढ़ाने पर दस-दस हजार यज्ञों के फलों को पा जाता है।" श्री मुलखराज जी श्री कृपानिधान जी की आज्ञा को पाकर तत्काल ध्यान में बैठ गये। उन्होंने देखा एक बड़े दिव्य सुन्दर प्रदेश में एक दिव्य प्रकाशनीय सिंहासन है। उस सिंहासन पर परम सद्गुरु तत्व मूर्तिमान होकर विराजमान है। श्री प्रभुजी का वह रूप अद्भुत व अलौकिक था। परात्पर ब्रह्म प्रकाश था। श्री मुलखराज जी महाराज ने जब ऐसे अचिन्त्य रूप को देखा वेदों की ऋचायें जिसकी स्तुति गा रहीं थीं, देव लोग पुष्प वर्षा रहे थे। ऐसे नित्य परात्पर शुद्ध स्वरूप को देख करके श्री मुलखराज जी तनमन से न्यौछावर

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

हो गये और एक कदम बढ़ाकर साष्टांग दण्डवत् प्रणाम किया। श्री प्रभुजी ने अपना परम् तेजोमय कर कमल बढ़ा करके उनको आर्शीवाद दिया, उस आर्शीवाद के साथ यह मालूम पड़ता था कि बहुत बड़ी अखंड तेज राशि उनके शरीर में प्रवेश कर गई। इसी प्रकार दूसरा कदम बढ़ाकर साष्टांग दण्ड वत् प्रणाम किया। पुनः उसी प्रकार श्री प्रभुजी ने अपना कर कमल बढ़ाकर आर्शीवाद दिया और वह आर्शीवाद के साथ ही तेजराशि पुनः उसी प्रकार उनके शरीर में प्रवेश कर गई। इसी प्रकार ज्यों-ज्यों कदम बढ़ा करके ये साष्टांग प्रणाम करते थे त्यों-त्यों वह तेज धारायें उनको प्राप्त होती रहीं। अन्त में परम् सद्गुरु तत्व श्री प्रभुजी के चरणारविन्दों में लिपट गये। श्री प्रभुजी के चरणारविन्दों में लिपटते ही श्री मुलखराज जी अपनी नाम रूपी सत्ता को खो बैठे। वह वही रह गये जिनके चरणों पर उन्होंने अपने आपको न्यौछावर किया था।

इस दिव्यानुभव को देख कर श्री मुलखराज जी ध्यान से उठ बैठे। पूछने पर अपने ध्यान का पूरा अनुभव प्रश्न करने वाले जिज्ञासु को सुना दिया और बतला दिया कि यही वह परम् तत्व है जिसके ऊपर न्यौछावर होने पर एक एक कदम बढ़ाने से दस दस हजार अश्वमेध यज्ञों का फल प्राप्त होता है। शास्त्र का वचन है—

"गुरु भक्ति सदा कुर्यात् श्रेय से भूयसे नरः।"

यदि मनुष्य परम् कल्याण को चाहे तो उसे गुरु भक्ति करनी चाहिये। परम कल्याण का श्रोत श्री गुरु देव के चरण कमलों से बहता है। प्रश्न कर्त्ता जिज्ञासु को यथोचित उत्तर पाकर के परम् संतोष हुआ और उसने जान लिया "नास्ति तत्वं गुरो परम्" अर्थात्—गुरुदेव से बढ़ कर के इस संसार में और कोई तथ्य नहीं है।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

श्री मुलखराज जी को तृतीय नेत्रदान

एक वार श्री मुलखराज जी की अत्यन्त विनय और नम्रता पर हर समय आल्हादित रहने वाले योग-योगेश्वर श्री प्रभुजी ने श्री मुलखराज जी को अपने पास बुलाया और उनके दोनों भ्रुवों के बीच के मांस को थोड़ा हाथ से खींच दिया। ऐसा करने पर आज्ञा प्रदान की कि-वेटा तुम यहाँ बैठे रहो कुछ देर में तुम्हें यहाँ जलन मालूम पड़ेगी और प्रकाश मालूम पड़ेगा तब हमें बतला देना। "इस तृतीय नेत्र के प्रकाश को श्री मुलखराज जी चलते फिरते उठते बैठते हर समय देखते रहा करते थे। दिन प्रति दिन इसका प्रकाश अति उज्वल होता चला गया।"

———

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

सिद्ध लोक दर्शन

एक रोज श्री प्रभुजी ने आल्हादित मन से कहा—ऊपर आकाश की ओर तो देखो। ज्यों ही श्री मुलखराज जी ने अपनी दृष्टि को ऊपर उठाया, थोड़ी ही देर में इस तृतीय नेत्र के प्रकाश में अनंत लोक दिखाई दिये। उसके बाद थोड़ी ही देर में दृष्टि सिद्धलोक को चली गई तो श्री मुलखराज जी ने अनन्त प्रकाशमय श्री सिद्ध लोक को देखा। उसमें कपिलादिक महासिद्ध दिव्य तेजोमय रूप से विराजमान थे। वहाँ पर तम् का लवलेश भी नहीं था। इस अद्भुत दृश्य को देख करके श्री मुलखराज जी कृतार्थ होगये।

यस्य कृपांशात् सुविनिष्ट पापः स्तृतीय नेत्रेण-समुद्गतेन।
महाप्रकाशेन सुसिद्ध लोकमीक्षेच वाह्ये मुलखस्तमाश्रये।

अर्थात्—जिनकी कृपा के एकांश को पाकर के महाप्रकाश मय तृतीय नेत्र को पालिया और उस तीसरे नेत्र को पाकर के परम् प्रकाशमय उस सिद्ध लोक को क्षण भर में देख लिया। ऐसे योग-योगेश्वर परम् प्रभु रामलाल जी हम सब के आश्रय स्थान है। उनकी चरण शरण से ही हम सब भी कृतार्थ होंगे। श्री मुलखराज जी का हृदय परम् संतों जैसा हृदय था। वह बड़ी जल्दी दयाद्र हो जाया करते थे। एक बार उनको ध्यानस्थ देख करके गरीब ब्राह्मण ने प्रार्थना की महाराज मैं लगभग २७ वर्ष से ध्यान का अभ्यास कर रहा हूँ किन्तु मुझे कोई अनुभूति नहीं होती। श्री मुलखराज जी का हृदय उस ब्राह्मण की सत्यवादिता पर बहुत प्रसन्न हुआ और उसे श्री प्रभुजी के चरणारविन्दों में ले गये और उसकी यथार्थ स्थिति बतला दी। श्री परम कृपासागर प्रभुजी ने उसको पुष्प प्रसाद दिया उसके फलस्वरूप उसी समय से उसको दिव्य दर्शन प्रारम्भ हो गये। वह दीन ब्राह्मण कृत कृत्य हो गया।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

श्री प्रभुजी के चरण कमलों में मलाया देवी के लिंग शरीर का दर्शन व उसको सद्गति

मलाया देवी अमृतसर में एक भक्ति मती स्त्री थी। श्री प्रभुजी के चरणारविन्द के दर्शनार्थ आने का उसका नैतिक नियम था। श्री प्रभुजी ने उसको कई बार योगाभ्यास के लिये आदेश दिया किन्तु वह कुछ न करपाई और अचानक छत से गिर कर के उसका देहावसान होगया। श्री मुलखराज जी महाराज ने ध्यान में देखा, मलाया देवी अपने कारण शरीर से श्री प्रभुजी के पास बैठी हुई है, बड़ी उदास मालूम पड़ती है। श्री मुलखराज जी ने पूछा प्रभो ! यह मलाया आज आपके पास उदास सी बैठी क्यों मालूम पड़ती है। शी प्रभुजी ने उत्तर दिया— बेटा इसको हमने भजन ध्यान के लिये काफी उपदेश दिया किन्तु इसने कुछ नहीं किया। आज अकस्मात् छत से गिर कर इसका शरीर छूट गया है और यह हमारे पास आई हुई है।

हम अब यह सोच रहे हैं कि इसे अब कहां भेजें। श्री मुलखराज जी ने प्रार्थना की हे ! करुणासागर जब आपने इसे अपना ही लिया है तो इस पर परम अनुग्रह करके इसको अपना दिव्य धाम दीजिये। आपके चरणों में आकर के भी यदि इसकी सद्गति न हुई तो मंद प्राणी और कहाँ कर पायेंगे। श्री मुलखराज की विनय को सुन कर श्री प्रभुजी ने मुस्कराते हुए आकाश की ओर देखा। श्री प्रभुजी के देखते ही देखते झिल मिलाता हुआ एक दिव्य सिंहासन नीचे आया जिसको दिव्य चतुर्भुज

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पुरुष सँभाले हुए ला रहे थे। मलाया को श्री प्रभुजी ने आज्ञा दी— मरी अब मेरे पास क्यों बैठी है जा उसमें बैठ जा।"

श्री प्रभुजी के कृपामय आशीर्वाद को पाकर के मलाया चटपट भागकर उस सिंहासन पर जाकर बैठ गई। उस सिंहासन में बैठते ही वह दिव्यांम्बरधरा चतुर्भुजा देवी बन गई। चतुर्भुजा होते ही उसने श्री प्रभुजी को बारम्बार प्रणाम किया और सिंहासन के रक्षक चतुर्भुज दूतों ने भी श्री प्रभुजी को प्रणाम किया। श्री प्रभुजी से आज्ञा पाते ही वह दिव्य सिंहासन तत्काल देव लोक को चला गया। श्री प्रभुजी के परम अनुग्रह को पाकर के मलाया देवी परम् श्रेय को पागई। यह ज्यों की त्यों सारी घटना श्री मुलखराज जी महाराज ने तत्काल ध्यान में देखी। ध्यान से उठने के बाद पता चलाया तो मालूम हुआ कि थोड़ी देर पहले ही मलाया मकान से गिर कर शरीर छोड़ चुकी थी।

———

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

श्री बैकुन्ठ पति भगवान विष्णु के दिव्य दर्शन

एक बार श्री मुलखराज जी महाराज के मन में श्री प्रभुजी की कृपा के अमूल्य धन को पाकर के यह धारणा बनी कि अहर्निश अपने अभ्यास को अधिकाधिक बढ़ायें कोई एक क्षण भी खाली नहीं रहना चाहिये उनको ख्याल आया कि—"कबिरा स्वांसा खाली जात हैं तीन लोक का मोल।" इसी बात को विचार करके जो सहज समाधि उनकी बनी रहती थी उसके बने रहने पर भी बाकायदा रात्रि को भी अपना अभ्यास दृढ़ता के साथ करना आरम्भ कर दिया। मनुष्य के मन में प्रारब्ध-वश क्लिष्टाक्लिष्ट उत्थान पतन बनता ही रहा करता है समाधिस्थ होने पर भी, "वृत्ति सारूप्य मितरज," नियम चालू ही रहता है। जब तक उत्क्रिष्ट सत्व उज्ज्वल नहीं हो जाता तब तक रज और तम की वृत्तियें भी यदा कदा अपना प्रभाव भी डालती हैं।

एकबार रात्रि के अभ्यास में तमो वृत्ति निद्रा ने अपना प्रभाव डालना आरम्भ किया। वह हर बार सचेत होकर बैठते थे किन्तु उस दिन निद्रा उनको बार बार विचलित कर देती थी और यथार्थ स्थिति को बढ़ने नहीं देती थी। इस प्रकार के कालयापन को अपनी बहुत बड़ी हानि समझ करके श्री मुलख-राज जी महाराज ने एक दीवार के साथ बैठ करके अपनी चोटी को खूँटी से बाँध दिया और फिर भी निद्रा आई तो उन्होंने जोर का झटका लगाया।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

उसके फलस्वरूप करुणार्व के मन में महान् करुणा उपजी और उन्होंने देखा कि आकाश से एक महान् प्रकाश नीचे आ रहा है और उसकी एक तेज धारा इनके सिर पर पड़ी थोड़ी ही देर के बाद ऊपर को दृष्टि उठाई तो देखा कि बैकुन्ठपति भगवान् विष्णु स्वयं दिव्य चतुर्भुज स्वरूप से नीचे की ओर आरहे हैं और अपने शंख से इनके सिर पर तेज की धारा फैंक रहे हैं साथ ही बैकुन्ठ लोक भी दीख रहा है। ज्योंही श्री मुलखदाज जी ने भगवान् विष्णु के द्वारा इस तेज प्रकाश को प्राप्त किया तो वह पूर्ववत् भगवान् के चतुर्भुज स्वरूप में लीन होकर स्वयं भी चतुर्भुज हो कर बैठ गये। जिस समय थोड़ी सी भी इनकी लयता भंग होती थी तो खुली ही आँखों उत्तमोत्तम दर्शन सामने आते थे। जिस समय ये प्रातःकाल ध्यान से उठे और श्री प्रभुजी के दर्शनार्थ कटरा भाई संतसिंह को गये तो श्री प्रभुजी ने बड़े प्यार से इनको कंठ से चिपका लिया और कहा-बेटा तुमने अपनी चोटी को क्यों इस प्रकार बाँध लिया क्या यह शरीर तुम्हारा है। तुम्हारा तन मन तो हमारा है तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिये था। श्री प्रभुजी के इतना कहने पर श्री मुलखराजजी ने देखा कि स्वयं श्री प्रभुजी की चोटी के बाल खींचे हुए हैं और टूटे हुए हैं। श्री प्रभुजी की इस कृपा की महानता को जान कर उस दिन से श्री मुलखराज जी और भी ज्यादा सचेत रहने लगे। श्री मुलखराज जी इस स्थिति में जहाँ लीनता रहती थी वहाँ, "ईशाह्या सकला देवा दृश्यं ते परमात्मनि।"

अर्थात्—ईश आदि सभी देव उस परम प्रकाश में दिखलाई देते हैं। इस नियम के अनुसार श्री मुलखराज जी का उस स्थिति के अन्दर रहने वाले सभी सिद्ध योगिराज व अन्यान्य महात्माओं

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

के भी समय समय पर दर्शन होते रहते थे और वह सभी लोग प्रसन्न मुद्रा में धन्य धन्य कहते हुए दृष्टिगत होते थे। आनन्द-कन्द अखिलात्मा भगवान् श्री कृष्ण की दिव्य रासलीला और स्वयं भगवान् श्री कृष्ण के स्थूल दर्शन भी इनको प्राप्त हुए; किन्तु इनका मन सद्गुरुदेव श्री प्रभुजी के चरणारविन्द में ही विलीन रहता था। अतः नाम रूप से उन्हीं के चेतन स्वरूप में समाधिस्थ रहा करते थे।

———

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

ब्रह्मपुरी दर्शन

एक बार श्री आनन्दकन्द प्रभुजी श्री मुलखराज जी को इसी तुरीय स्थिति में अपने साथ ऋषिकेश ले गये व काली कमली वाले क्षेत्र में कई दिन तक निवास किया। ऋषिकेश से लगभग ६—७ मील ऊपर ब्रह्मपुरी का जंगल है। बन को जाते हुए और बन से लौटते हुए श्री प्रभुजी ने कुछ समय यहाँ निवास किया था। अपने आपको ऋषिकेश आया देख कर के श्री मुलखराज जी के मन में यह धारणा बनी कि अब ऋषिकेश आये हुए हैं, जिस पवित्र बन में श्री प्रभुजी ने निवास किया उसके दर्शन करलें और अवसर पाकर यह प्रार्थना श्री प्रभुजी के चरणारविन्दों में की। श्री मुलखराजजी की हार्दिक अभिलाषा को देख करके श्री प्रभुजी उनको ब्रह्मपुरी ले गये व वहाँ जाकर ब्रह्मधारा के दर्शन कराये। वहाँ पर श्री गंगा जी से कुछ ऊपर ब्रह्मधारा के निकट पहाड़ में वह गुफा थी जिसमें श्री प्रभुजी ने बन जाते हुए और बन से आते हुए हरिद्वार कुम्भ से पहले निवास किया था

ब्रह्मधारा के दक्षिण भाग में एक सुन्दर वाटिका थी जिसमें केले के वृक्ष अभी तक बहुत काफी विद्यमान हैं और कुछ बन के वृक्ष लगे हुए हैं। साधुओं ने कुछ और भी पौधे लगा लिये हैं। इसी वाटिका में बन के निवास काल में श्री प्रभुजी निवास किया करते थे। यहाँ पर जो केले लगे हुए हैं इनका बीजारोपण पहले पहले श्री प्रभुजी ने ही किया था। श्री प्रभुजी यह बढ़िया केले कहीं से लाये थे और अपने हाथों यहाँ लगा दिये थे।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

आज कल यह केले वहाँ पर काफी मात्रा में फैले हुए हैं। महात्माओं ने कुछ पर्ण कुटीरें भी यहाँ आज कल बनाली हैं। उत्तराखंड से आने वाली श्री गंगाजी पूर्व की ओर से पश्चिम की ओर अपने प्रवाह को बहाती हुई श्री प्रभुजी की गुफा के पास से ऋषिकेश की ओर निकल गईं हैं और उत्तर की ओर से आने वाली ब्रह्मधारा, जिसको स्वयं श्री प्रभुजी ही इधर की ओर निकाल कर लाये थे, जो श्री प्रभुजी की गुफा के पास होती हुई गंगा जी में मिल गई हैं।

ब्रह्मपुरी का यह निर्मल दृश्य देखते ही बनता है। ब्रह्मधारा के बीच में पत्थरों का चुनाव एक जगह पर इस प्रकार का हो गया है उसको श्री प्रभुजी अपने मुखारविन्द से अपना कटोरा बतलाया करते थे। वहाँ बैठकर श्री मुलखराज जी ने जलपान करने की इच्छा प्रकट की तो श्री प्रभुजी ने कुछ जंगली पत्तियें श्री मुलखराज जी को दे दी और उनको जीभ पर रख कर जल पीने की आज्ञा दीं तो वह जल अत्यन्त मीठा लगा मानों वह कोई बहुत मीठा शर्बत पी रहे हैं जिसमें दिव्य सुगन्ध भी मिली हुई है।

यह जल पान कर लेने के बाद श्री प्रभुजी श्री मुलखराजजी को ब्रह्मधारा सेऊपर कुछ दूरी पर जंगल में ले गये। वहां से कंद खोद कर मँगवाया और श्री मुलखराज जी को खाने की आज्ञा दी। श्री प्रभुजी से आज्ञा पाकर के जिस समय उस कन्द को खाया तो उसका स्वाद बहुत ही मधुर था। उस कन्द के खाने पर इनको अनुभव हुआ कि जैसे कोई बहुत स्वादिष्ट पक्वान्न खाया है श्री प्रभुजी ने कहा कि बेटा इन बनों में साधुओं की यहीं मिठाइयें जस समय श्री मुलखराज जी कन्द को खोद रहे थे उसी समय पत्तों की आहट सुन करके एक चीता

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

कहीं से निकल आया। चीते को देख कर के श्री प्रभुजी ने कहा कि बेटा देखो यह क्या आ रहा है। श्री मुलखराज जी ने उस चीते को हिंस्र जन्तु न समझ कर अपने ही आत्मा की तरह प्यार से देखा उसकी ओर आगे को बढ़े तो वह चटपट भाग गया।

इस प्रकार से ब्रह्मपुरी के जंगल का चारों ओर का दृश्य दिखला करके श्री मुलखराज जी को श्री प्रभुजी अपने साथ ऋषिकेश लौटा लाये। उन दिनों ऋषिकेश में रेलवे स्टेशन बनने वाला था श्री प्रभुजी नित्य ही कहीं न कहीं भ्रमण करने जाया करते थे और श्री मुलखराज जी को भी साथ ले जाया करते थे। एक रोज स्टेशन बनने की जगह को देखने को गये, वहाँ पर बहुत सुन्दर सुन्दर मृग चर रहे थे। जिस समय यह दृश्य देख ही रहे थे देखते ही देखते एक चीता निकला और एक मृग के बच्चे को उठा कर लेगया। इस घटना को देख कर के श्री प्रभुजी ने श्री मुलखराज जी को समझाया कि—बेटा इस संसार में जीव जीव का आहार है।

प्राणी मात्र काल के गाल में है बुद्धिमान मनुष्य वही है जो इस मनुष्य लोक में जन्म पाकर अपने आपको काल के चक्र से बचा ले और जन्म मरण से छूट करके अपने परम् लक्ष्य को प्राप्त करले। इस मनुष्य जन्म का यही परम् पुरुषार्थ है। इस प्रकार से ऋषिकेश में रह करके श्री प्रभुजी श्री मुलखराज जी को अनेक आकृति दृश्य दिखला कर शिक्षा देते रहे और अभ्यास व वैराग्य को दृढ़ बनाते रहे। सायं समय भ्रमण के लिये ले जाया करते थे और रात्रि को बस्ती में लौट आया करते थे।

श्री प्रभुजी काली कमली वाले के क्षेत्र में ठहरे हुए थे।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

एक दिन वहाँ पर कोई भंडारा था उस भंडारे में एक उग्र स्वभाव वाले महात्मा बैठ गये जो अक्सर अपने क्रोध वश होकर भंडारों में विघ्न बाधाएँ पैदा किया करते थे। जिस समय श्री प्रभुजी उस साधु की तरफ बार बार देख रहे थे तो श्री मुलखराज जी ने पूछा प्रभो! क्या कारण है जो आप इस महात्मा की ओर देख रहे हैं श्री प्रभुजी ने उत्तर दिया बेटा यह महात्मा बहुत उग्र स्वभाव का है अक्सर भंडारों में बाधा डाल दिया करता है हम इसकी ओर इसीलिये देख रहे हैं कि यह यहाँ पर इस प्रकार की कोई उदण्डता न करे। उस महात्मा ने भी श्री प्रभुजी की दृष्टि को देख लिया था इसलिये चुपचाप भोजन करके बहुत जल्दी और साधुओं से पहले ही वहां से उठ कर चला गया।

इस प्रकार से ऋषिकेश व हरिद्वार आदि का भ्रमण करा के कुछ समय के बाद श्री प्रभुजी पुनः श्री मुलखराज जी को साथ लेकर अमृतसर आ गये। वहाँ पर पूर्ववत् अपना नैतिक सत्संग का कार्यक्रम बाकायदा चलने लगा।

———

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

जल में दिव्य गुणों का प्रकाश

एक वार श्री आनन्द कन्द प्रभुजी सुन्यारा वाले कुँए पर विराजमान थे, सत्संग बाकायदा चल रहा था। श्री प्रभुजी को कुछ प्यास लगी और उन्होंने श्री मुलखराज जी को किसी कुँए से जल लाने की आज्ञा प्रदान की। आज्ञा पाकर श्री मुलखराज जी जल लेने चल दिये तो उनके मन में बागमती गंगा के जल की स्मृति बन उठी। वह मन में विचारने लगे कि श्री प्रभुजी बागमती के जल की बहुत प्रशंसा किया करते हैं सो आज कहीं से उसी प्रकार का जल उपलब्ध हो तो मैं लेजाकर श्री प्रभुजी को पिलाऊँ। यह सोचते सोचते ही श्री मुलखराज जी एक कुँए पर चहुँचे। कुँए पर पहुँच करके ज्यों ही उन्होंने कुंए की ओर दृष्टि डाली तो कुँए में बहते हुए जल की एक पवित्र धारा दिखलाई दी। श्री मुलखराज जी ने उसी धारा से बड़ी जल्दी जल भर लिया और श्री प्रभुजी के चरणारविन्दों में ले गये।

पास में बैठे हुए और सत्संगियों ने व श्री प्रभुजी ने जलपान किया तो वह जल बहुत ही ठंडा और मीठा लगा। मुक्त कंठ से सभी लोग प्रशंसा करने लगे और जल के इतना मधुर होने का कारण श्री प्रभुजी से ही पूछा। श्री प्रभुजी ने उत्तर दिया कि जिस समय यह मुलखराज जल लेने गया था इसके मन में उस समय बागमती जल की धारणा थी सो इसके एकाग्र मन के संकल्प से ही इस जल में इन गुणों का प्रकाश हुआ है।

———

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पिशाच की निवृति

सत्संग का प्रवाह बराबर इसी प्रकार चलता रहा एक रोज सत्संग में एक देवी रोती और चीखती चिल्लाती हुई आई। श्री प्रभुजी ने उससे कारण पूछा तो उसने बतलाया कि प्रभो ! कई महीने से मेरे पतिदेव को कोई अवोगत आत्मा लगा है वह उसको बड़ा दुःख देता है। मेरे पतिदेव हमेशा पागल की तरह से रहते हैं। उनका काफी उपचार कराया है किन्तु कोई शांति नहीं होती। श्री प्रभुजी ने श्री मुलखराज जी की ओर इशारा करते हुए कहा– बेटा तुम अपने गले की कमीज उतार कर के इसको दे दो यह जाकर अपने पति को पहना देगी तो उसकी सब व्याधि शांत हो जायेगी। और फिर इसको यह पिशाच नहीं सतायेगा। श्री मुलखराज जी ने अपने गले की कमीज उतार कर के उस देवी को दे दी। वह उसको साथ लेकर और जाकर के वह कमीज अपने पति के शरीर पर डाल दी। कमीज के सिर पर डालते ही उसका पति बेहोश होकर गिर पड़ा।

लगभग एक घन्टे के बाद दुबारा होश आया तो वह बिल्कुल स्वस्थ था। उसको किसी प्रकार की कोई तकलीफ न रही थी। श्री प्रभुजी की आज्ञानुसार श्री मुलखराज जी की वह उतीरण कमीज उस देवी ने अपने पति को पहनाये ही रक्खी जिससे उसके पति की सभी प्रकार की व्याधा कट गई। दूसरे दिन श्री प्रभुजी के चरणों में जाकर के उस देवी ने प्रार्थनाकी कि प्रभो ! मेरा पति अब बिल्कुल ठीक है आपकी कृपा से उसके अब सब संकट दूर हो गये हैं।

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

मंत्रोपचार करने वाले ब्राह्मण पर विपरीत प्रभाव

श्री मुलखराज जी के मन में तीव्र वैराग्य प्रवाह हर समय चलता ही रहता था। वह यह चाहते थे कि किसी निर्जन वन में जाकर एकांत वास करें। उनके मन के यह भाव उनके घरवालों पर भी प्रगट हो गये थे। श्री मुलखराज जी के इन भावों से घर वाले हर समय चिंतित रहते थे और वह यह चाहते थे 'येन् केनो' पायेन श्री मुलखराज जी बन न जायें और घर में रह कर ही अपना व्यवसाय कार्य करते रहें। इसी कारण को मध्य नजर रखकर श्री मुलखराज जी का छोटा भाई किसी उपचारक ब्राह्मण से जाकर मिला और प्रार्थना की कि महाराज आप कोई ऐसा उपाय कर दीजिये जिससे मेरे बड़े भाई वन में जाने का विचार छोड़ दें।

ब्राह्मण ने कहा अच्छा यदि ऐसा विचार है तो अपने भाई का कोई वस्त्र ले आओ उसमें हम गाँठें लगा देंगे। गाँठे लगाने पर उस वस्त्र को तुम जहाँ जाकर रक्खोगे उसके पास ही तुम्हारे भाई आकर बैठ जायेंगे तब तुम अपने भाई से प्रतिज्ञा करा लेना कि वह वन को न जायें। उस वस्त्र के पास बैठकर प्रतिज्ञा कर देने के बाद वह बन को नहीं जा सकेंगे। श्री मुलखराज जी के छोटे भाई ने यही सब कार्य किया वस्त्र को गाँठें लगवा कर उसे अपने घर में जाकर रख दिया। किन्तु श्री मुलखराज जी पर उसका कोई प्रभाव न पड़ा। वह वस्त्र ज्यों का त्यों ही रक्खा रहा। दूसरे दिन श्री मुलखराज जी का भाई पुनः उस ब्राह्मण के पास गया तो जाकर क्या देखा कि वह ब्राह्मण दुःख

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

के मारे बिलबिला रहा है। जिस समय मुलखराज जी के भाई ने उस ब्राह्मण से पूछा कि भाई क्या बात है तो उस ब्राह्मण ने जवाब दिया कि कल जो वस्त्र गाँठें लगाकर तुम ले गये थे उसे जल्दी से जाकर ले आओ। उस वस्त्र के द्वारा जिस पर तुमने उपचार कराया है उस पर तो किसी पूर्ण शक्तिवान का हाथ है। उस पर कोई जादू मन्त्र नहीं चल सकते जब तक मैं अपने हाथों उन गाँठों को नहीं खोल दूँगा तब तक मेरी यही दुर्दशा रहेगी और मृत्यु भी हो सकती है।

इसलिये जल्दी लाकर वह वस्त्र मुझे दे दो ताकि मैं मौत से बचजाऊँ या जल्दी से जाकर तुम्हीं उसकी गाँठें खोल दो तभी मेरा यह कष्ट दूर होगा। श्री मुलखराज जी के भाई ने ब्राह्मण पर दया करते हुए जल्दी जल्दी जाकर उस वस्त्र की गाँठें खोल दीं परिणामस्वरूप जब दुबारा जाकर देखा तो वह ब्राह्मण बिल्कुल ठीक था। दुबारा जाने पर ब्राह्मण ने श्री मुलखराज के भाई से कहा कि तुम अपने भाई पर किसी से कोई उपचार आदि बिल्कुल न कराना अन्यथा करने वालों की यही दशा होगी जो इस समय हमारी हुई थी।

———

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

श्री प्रभुजी की काश्मीर यात्रा

श्री प्रभुजी ने भ्रमणार्थ एक बार काश्मीर जाने का विचार किया और सकल्प बनते ही दो एक दिन बाद ही काश्मीर यात्रा पर चल पड़े। इस यात्रा में श्री प्रभुजी ने श्री मुलखराज जी को भी अपने साथ ले लिया था। काश्मीर यात्रा को जाते हुए श्री प्रभुजी कुछ दिन शहर रावलपिंडी में ठहरे वहाँ पर बहुत से जिज्ञासु लोग अपनी भावनाओं को लेकर श्री प्रभुजी के चरणों में आये लोगों ने अनेक प्रकार से लौकिक और पारलौकिक लाभ उठाये। कुछ दिन रावलपिंडी रहने के बाद भी प्रभुजी श्रीनगर चले गये। श्रीनगर में भी स्वभावतः ही सत्संग चालू रहा।

श्री प्रभुजी साध्यासाध्य रोगों की कष्ट निवृति के लिये प्रातः काल १० बजे से १२-१ बजे तक योग साधन के द्वारा कार्य करते थे और बाद दुपहर सत्संग आदि का कार्य चलता था। कुछ दिन सत्संग चलने के बाद उस शहर का एक जेल दरोगा बाबू करमचन्द नाम के सत्संग में आने लगे। धीरे-धीरे इनके मन में प्रेम की वृद्धि हुई। सत्संग में आने से ये नित्य श्री प्रभुजी की चमत्कारिक घटनाएँ सुनते रहते थे किन्तु वृत्ति बहिर्मुखी रहने के कारण इनकी पूरी पूरी आस्था नहीं बन पाती थी।

इसलिये वह यह चाहते थे कि किसी ध्यानाभ्यासी सत्संगी बालक से बातचीत करें। इसीलिये एक रोज वह अपने ताँगे में एक बैंक के क्लर्क को अपने साथ ले गये जो श्री प्रभुजी के

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

चरणारविन्द में काफी दिनों से दीक्षित था और ध्यान स्थिति अच्छी चल रही थी ताँगे में साथ ले जाकर उससे ध्यान सम्बन्धी बातचीत करते रहे अपने संशय निवृत होने के बाद उन्होंने उसको ताँगे से बाहर उतार दिया और कह दिया कि अब आप बड़ी खुशी से अपने स्थान पर जा सकते हैं। ऐसा करने में उस ध्यानी भक्त क्लर्क के मन में कुछ क्षोभ पैदा हुआ और दरोगा के प्रति अशुभ भावनाएँ मन में गुजरने लगी। यदि उन भावनाओं पर कन्ट्रोल न किया जाता तो एक भयंकर झंझाबात पैदा हो जाता। ऐसा करने से बहुत लोगों को हानि थी इसलिए श्री प्रभुजी ने उस ध्यानी भक्त की बढ़ी हुई मानस ताकत को कम कर दिया जिससे कि किसी को कोई हानि न हो सके किन्तु उसको यह अच्छा नहीं लगा। और भी पास में बैठने वाले सत्संगी यह सोच रहे थे कि इसकी बड़ी हुई स्थिति आज कमजोर दिखलाई दे रही हैं इसलिये यह उदासीन व चिंतित दिखलाई दे रहा है।

जिस समय वह ध्यानी भक्त श्री प्रभुजी के चरणारविन्दों में लौटकर आया तो श्री प्रभुजी ने उसको समझाया कि एकाग्र मन वाला व्यक्ति जिसके लिये जो भी अच्छा या बुरा सोचता है। वह हो जाया करता है इसलिये तुम लोगों को मन में कोई कु-संकल्प नहीं बनाना चाहिए जिससे दूसरे के होते हुए भले में कोई विघ्न बाधा न हो। तुम्हें भी ऐसा ही चाहिए। इसलिये आज से आगे तुम अपने मन की ताकत को संभाल कर रक्खा करो, न किसी से ईर्ष्या करनी चाहिए न द्वेष करना चाहिए न राग करना चाहिये। जो लोग ईर्ष्या द्वेष आदि के चक्कर में पड़े रहते हैं उन लोगों के अन्दर पूरी शक्ति का उत्थान नहीं होता। यत्किंचित शक्ति बनती भी है तो वह राग द्वेषादि

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

द्वारा निकल भी जाती है। इसलिये संभल कर अपना विकास करो। श्री आनन्द कंद प्रभुजी के पूर्ण कृपा भाव को देखकर के जेल दरोगा करमचन्द के मन में पूर्ण श्रद्धा पैदा हुई और श्री प्रभुजी से प्रार्थना करके उसने भी योग दीक्षा ग्रहण करली। इसी प्रकार बराबर सत्संग चलता रहा।

समय-समय पर सत्सगी लोग भ्रमणार्थ बाहर चलने के लिये प्रार्थना किया करते थे। एक रोज जेल दरोगा करमचन्द ने भी यह प्रार्थना की कि प्रभो! आप कश्मीर आये हैं कहीं भ्रमण करने के लिए चला करे यदि आप मेरे साथ चलें तो मैं यहाँ की जेलें दिखाऊँ और जेलियों के हाथ का बना हुआ सामान दिखलाऊँ। श्री प्रभुजी ने कहा कि हम तुम्हारे साथ जेल देखने चल सकते हैं यदि तुम हमारे कथनानुसार जिनको हम कहें उनको छोड़ दो। दरोगा कर्मचन्द ने प्रार्थना की प्रभो! छोड़ना तो मेरे आधीन नहीं है किन्तु उनको सब प्रकार की सुविधा दी जा सकती है। कुछ भी हो प्रार्थना करने पर भी श्री प्रभुजी उन लोगों के साथ नही गये और श्री मुलखराज जी को उनके साथ भेज दिया। श्री मुलखराज जी नित्य ध्यानावस्था में देखते थे कि श्री प्रभुजी एक मुसलमान पीर को सूक्ष्म शरीर से उसी दिन से अपनी गोद में रख रहे थे जिस दिन से वह श्रीनगर आये थे। श्री मुलखराजजी करमचन्द दरोगा के साथ भ्रमण करने चल पड़े उन्होंने पहले अपनी जेलें दिखाई, जेलियों के बने हुए सामान दिखाये। जेल के सब भाग देख कर के जिस समय वह जेल के चौक में पहुँचे तो उन्होंने देखा कि एक मुसलमान पीर उल्टा मुँह किये हुए पड़ा है।

श्री मुलखराज जी ने पहचाना—उसी फकीर के सूक्ष्म शरीर को श्री प्रभुजी जब से श्री नगर आये थे। अपनी गोद में

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

रखे हुए थे। श्री मुलखराज जी ने उस फकीर को जगाया और जब वह जगा तो उससे पूछा—क्यों श्री प्रभुजी के चरण कमलों से लिपटे हो। उसने कहा हाँ वह परवर दिगार एक बार यहाँ आये थ और दुबारा आने का वचन दे गये थे अब फिर आये हैं और मुझे गोद उठा लिया है। कुछ और भी पड़े हैं और उनकी राह देख रहे हैं। श्री मुलखराज जी उस फकीर के वचनों को सुनकर बड़े आल्हादित हुए व लौटकर श्री प्रभुजी के चरणों में निवेदन किया। प्रभुजी ने कहा—हाँ बेटा वह पीर फकीर हैं उसका कुछ काम शेष था वह इन दिनों में कर दिया गया है। अब वह यहाँ नहीं रहेगा आगे चला जायेगा। श्री प्रभु जी ने उसको सूक्ष्म में हुक्म दिया—फकीर तुम यहाँ से आगे चले जाओ।" सभी लोगों ने आश्चर्य देखा कि वह मुसलमान फकीर फिर वहाँ आगे नहीं दिखलाई दिया।

———

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

उन्मत्तों की तरह पड़े हुए योगी को आदेश

दूसरे दिन श्री प्रभुजी ने स्वयं आदेश दिया कि आज हम भ्रमण करने चलेंगे। श्री प्रभुजी का आदेश पाते ही सब तैयार हो गये और भ्रमण करने के लिये तैयार हो गये। थोड़ी दूर चलने पर श्री प्रभुजी ने श्री मुलखराजजी को आज्ञा दी कि बेटा तुम हमसे कुछ आगे चलो और देखते चलो जो कोई छिपे हुए लिवास में तेजस्वी साधु दिखाई दे उसको तुम पहले से हमारे आने की सूचना दे देना। श्री प्रभुजी का आदेश को पाकर के श्री मुलखराज जी ने उसका उसी प्रकार पालन किया व स्वयं आगे-आगे चलने लगे। थोड़ी दूर आगे चलने पर गंदे नाले के किनारे पर मलिन वेश में पड़े हुए एक तेजस्वी महात्मा को देखा जो तेज से झिलमिला रहा था। उसको इतना महान तेजस्वी देखकर सूक्ष्म शरीर से मन ही मन कहा ऐ! तेजस्वी महात्मा श्री प्रभुजी आ रहे हैं।

यह आवाज सुनते ही वह कीच में लिपटा हुआ साधु उठ कर खड़ा हो गया और हाथ जोड़कर कहने लगा हाँ आ रहे हैं, वे मेरे लिये आ रहे हैं। इतनी ही देर में स्वयं श्री प्रभुजी आ पहुँचे। श्री प्रभुजी को आया देखकर वह महात्मा उठा और भागकर दण्डवत् प्रणाम किया। श्री प्रभुजी ने उसको उठा करके कंठ से लगा लिया और उसको आज्ञा दी कि—बेटा तुम यहाँ से उठ जाओ और पहाड़ पर चढ़ जाओ। श्री प्रभुजी का आदेश पाते ही वह तेजस्वी किन्तु मलिन वेश में छिपा हुआ साधु तत्काल पहाड़ पर चढ़ गया और फिर उसका भी पता न चला कि वह कहाँ गया।

———

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

पागल के वेश में योगी

दूसरे दिन फिर श्री प्रभुजी परम् करुणार्णव होकर के पागल खाने की ओर होकर भ्रमण करने चले जिस समय पागलखाने में पागलों को देख रहे थे, एक उन्मत्त पागल ने भीतर से ही दण्डवत् प्रणाम करना प्रारम्भ किया। साथ के लोगों ने श्री प्रभुजी से विनम्र प्रार्थना की और पूछा कि हे प्रभो ! यह कौन है जो पागल होते हुए भी आपको साष्टांग प्रणाम कर रहा है। श्री प्रभुजी ने उत्तर दिया—यह पागल नहीं है किन्तु पागल के वेश में छुपा हुआ एक साधु है। यह साधु कमाई वाला है इसी आधार पर बार बार हमें नमस्कार कर रहा है। पागल के वेश में छुपे हुए उस योगी को आदेश दिया—बेटा अब तुम यहाँ से निकल जाओगे तुम भी यहाँ से जाकर कहीं जंगल में एकान्त वास करना। श्री प्रभुजी की आज्ञा को भले व्यक्तियों की तरह से स्वीकार किया और कहा कि प्रभो ! आपका आदेश यदि इस प्रकार है तो मैं अवश्य यहाँ नहीं रहूँगा।

श्री प्रभुजी ने अधिकारी लोगों से कह करके उसको भी वहाँ से निकलवा दिया। इसी प्रकार कुछ समय तक श्री प्रभुजी काश्मीर के रमणीक प्रदेश को देखते रहे। श्री मुलखराज जी महाराज की सहधर्मिणी का देहावसान भी इसी काश्मीर के भ्रमण काल में हुआ। जिसकी हर क्रिया को, जिस प्रकार कि मृत्यु समय वह उनको स्मरण करती रही उनको पहले से ही

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

यह ज्ञात हो गया था कि अब यह शरीर छोड़ रही हैं किन्तु मर्यादावश रुके रहे। जिस समय घर वालों की ओर से उनको यह सूचना मिली तो देवी के पाश्चात्य कर्म करने के लिये श्री प्रभुजी ने श्री मुलखराज जी को अपने से पहले अमृतसर भेज दिया।

श्री मुलखराज जी ने अमृतसर जाकर के देहावसान के बाद के सब कर्म कराये व हर वक्त हर समय ध्यानस्थ रहने लगे। उनकी धर्म पत्नी की जो सद्गति हुई वह पीछे की कथा में विशद वर्णन के साथ लिख दी गई है। कुछ दिन के काश्मीर भ्रमण के बाद श्री प्रभुजी अमृतसर चले आये। श्री प्रभुजी के अमृतसर लौट आने के बाद श्री मुलखराज जी ने फिर से अपनी साधना को दृढ़ता पूर्वक करना आरम्भ कर दिया। कुछ समय ये इसी प्रकार की साधना करते रहे फिर कुछ समय के बाद लगभग सन् १९३० के शुरू में श्री प्रभुजी ने इनको प्रचार कार्य में उतार दिया और श्री प्रभुजी के आदेशानुसार यह प्रचार कार्य करने लगे।

———

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

श्री मुलखराज जी व श्री गोपालानन्द जी को लाहौर में योग प्रचारार्थ भेजना

लगभग सन् १९२९ में श्री प्रभुजी ने श्री मुलखराज जी को आज्ञा प्रदान की—बेटा अब तुम लोक हित के लिये अपनी आँखें खोलो। तुम और गोपालानन्द दोनों भाई जाकर के लाहौर में योग प्रचार आरम्भ कर दो।

———

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

लाहौर में योग प्रचार

श्री प्रभुजी के आदेश को पाकर श्री मुलखराज जी महाराज व भाई श्री ब्रह्मचारी गोपालानन्द जी ने लाहौर जाकर योग प्रचार शुरू कर दिया। इन दोनों ने पहले पहले श्री सत्यनारायण जी के मन्दिर में जाकरके योग प्रचार आरम्भ कर दिया। श्री सत्यनारायण के मन्दिर में जाकर इन्होंने तीन प्रकार के कार्यक्रम बनाये। प्रातःकाल सात बजे से लेकर ग्यारह बजे तक साध्य असाध्य सभी प्रकार के रोगों की साधनों द्वारा बड़ी सरलता से चिकित्सा करनी शुरू की। बहुत थोड़े समय में ही काफी मात्रा में प्रचार बढ़ गया। प्रातः काल चिकित्सा कार्य होता था और सायंकाल श्री हरिनाम संकीर्तन योग के ढंग से करना आरम्भ कराया गया। और बाद दुपहर के कार्य क्रम में तीन से पाँच बजे तक भाषणों का कार्य आरम्भ हुआ। धीरे धीरे वह काफी बढ़ता गया और आश्रम में कई सौ आदमियों का यातायात बना रहने लग गया। कुछ समय बाद लाहौर में ब्रह्मचारी गोपालानन्द जी को छोड़ करके श्री मुलखराज जी महाराज अमृतसर चले आये।

इन्होंने अमृतसर में योग प्रचार आरम्भ किया और श्री गोपालानन्द जी ने लाहौर में। अमृतसर में आकर के इन्होंने लोगों को धड़ाधड़ साधन कराने आरम्भ किये जिसके फलस्वरूप बड़े बड़े असाध्य और कष्ट साध्य मरीज आश्रम में आने पर ठीक हो गये। चिकित्सा के अतिरिक्त एक बाकायदा आसन क्लास चलाई जिसमें बहुत से युवक लड़कों ने प्रवेश करके लाभ

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

उठाया । आसन क्लास का इंचार्ज श्री विद्याप्रकाश जी को बनाया । भाई विद्याप्रकाश जी ने अमृतसर के युवक मण्डल में काफी प्रचार किया और हठ योग की कठिन कठिन साधनायें की । यह सब कार्य अमृतसर में श्री मुलखराज जी के द्वारा और लाहौर में ब्रह्मचारी गोपालानन्द जी के द्वारा अनवरत चलता रहा । श्री आनंद कंद परम् योग योगेश्वर सद्गुरुदेव प्रभु श्री रामलाल जी महाराज की अध्यक्षता में काफी जगह योग प्रचार का कार्य होता रहा । किन्तु सन् १९३८ में श्री प्रभुजी की लीला अवसान के बाद यह सारी जिम्मेदारी श्री मुलखराज जीं के कंधों पर आ पड़ी और उन्होंने उत्साह के साथ इस कार्य भार को सँभाला । श्री प्रभुजी की लीला अवसान के बाद सभी भाई बहन इधर उधर भटक उठे थे ।

उनके मन में यह आस्था बन गई थी कि अब हम निःसहाय बन गये हैं किन्तु बात ऐसी नहीं थी । श्री मुलखराज जी ने श्री प्रभुजी के चरणारविन्दों से प्राप्त की हुई योग-शक्ति के द्वारा निःसहाय आशा हीन अपने सभी भाई बहनों को उत्साहहीन देख कर उन सबका उत्साह बढ़ाया और सभी को पुनः शक्ति पात देकरके दिव्यानुभूति कराई ।

जिस समय पंजाब व यू० पी० के बहन भाइयों ने यह सुना कि श्री मुलखराज जी ने यह कार्य भार सँभाल लिया है तो वह उत्साह के साथ आश्रम आने जाने लगे, और उनको भी समय समय पर अपने स्थान पर बुलाने लगे । सन् १९३८ के बाद कुछ समय तक लगभग ऐसा मौका रहा जिसमें श्री मुलखराज जी अधिकतर अमृतसर में ही निवास करते रहे । उसके बाद दूसरे प्रांतों का भी प्रचार आरम्भ हुआ ।

अन्यान्य प्रांतों में भ्रमण से पहले सन् १९४१ में श्री मुलख-

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

राज जी महाराज यू० पी० में चाँदपुर नामक शहर में जि० बिजनौर में गये और उनके वहाँ जाने पर कई प्रकार की विलक्षण घटनाएँ घटीं। जो बहन भाई योग से निराश होकर मन को पीछे हटा चुके थे उनको पुन: शक्ति पात करके उनकी शक्ति का उत्थान किया। और कितनों ही को भावावेश समाधियें महीनों तक पहुँचीं। कितनों की असाध्य बीमारियाँ उनके मन के सकल्प से दूर हो गई। कितने ही सद्गृहस्थ उनके मुख से वरदान पाकर के सन्तान वाले बन गये। आज भी चाँदपुर वासियों के मन में उनका योग प्रभाव कूट कूट कर भरा हुआ है। लाला हरस्वरूप चण्डी प्रसाद व रघुनन्दन प्रसाद आदि पवित्र अग्रवाल जैन घराने उनकी कृपाओं को भली प्रकार जानते हैं। सन् १९४५ में मेरे छोटे गुरुभाई योगिराज नृसिंह मूर्तिजी त्ती मुलखराजजी को पूर्ण आग्रह के साथ दक्षिण ले गये और वहाँ पर मद्रास प्रांत के प्रमुख शहरों में उनके भाषण कराये। कई कई सौ व्यक्तियों को एक एक साथ शक्ति पात दीक्षाएँ दिलाईं। फलस्वरूप उन लोगों ने भी श्री मुलखराज जी महाराज के बहुत बड़े अनुग्रह को प्राप्त किया। कितने ही जीवन निराश रोगी उनके प्रसाद भाग देने से ठीक हो गये। उस प्रांत की रानी सरस्वती आदि अब भी उनके परम् भक्तों में से हैं जो उनके गुणों का हर समय चिन्तन करते रहते हैं।

श्री मुलखराज जी के जीवन में बहुत बड़ी विशेषता यह थी कि वह सारा जीवन कर्त्तव्य परायण रहे और फल में आसक्ति रहित रहे। यह उन्होंने कभी भी विचार नहीं किया कि इसका परिणाम क्या रहेगा। उनके जीवन में सबसे बड़ी बात महत्व की यही रही कि सभी काम उन्होंने कर्त्तव्य बुद्धि से

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

किये और मन को हर समय श्री प्रभुजी के चरणारविन्दों में समर्पित रक्खा। ५ नवम्बर सन् १९६० में योगाभ्यास आश्रम कनखल में अपने अशाश्वत नश्वर देह का त्याग करके विदेह हो गये और मनुष्य जीवन के परम् लक्ष्य को प्राप्त किया। श्री मुलखराजजी महाराज के नक्शे कदम पर चलने वाला हर व्यक्ति अवश्य ही अपने आपको कृत कृत्य कर सकता है। श्री आनंद कंद प्रभुजी की परम् करुणा से श्री मुलखराज जी महाराज के जीवन की पवित्र घटनाओं का जितना मुझे स्मरण था और जो भी उन्हीं के द्वारा प्राप्त की हुई कथाओं से उपलब्ध हो सका उसको इस छोटी सी पुस्तिका में लिखने का प्रयत्न किया है जिससे उनकी पवित्र योग कथाएँ जन साधारण को योग मार्ग की ओर अग्रसर कर सकें।

शेष शुभ

———

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida

Digitized by Agamnigam Foundation, Chandigarh

श्री सिद्ध गुफा का परिचय

श्री सिद्ध गुफा योग योगेश्वर सद्गुरुदेव प्रभु श्री रामलाल जी महाराज का सबसे पुराना आश्रम है। नैपाल हिमालय को जाने से पूर्व श्री प्रभु जी ने कुछ समय यहाँ निवास किया था। श्री सिद्ध गुफा उनकी ऐतिहासिक पुण्य स्मृति है। इस गुफा की मिट्टी में श्री प्रभु जी का वरदान है, जो गुफा की पवित्र रज को श्रद्धा पूर्वक चाटते हैं वो सभी आधि व्याधियों से छूट जाते हैं। यह स्थान आगरा शहर से १५ मील की दूरी पर परगना ऐत्मादपुर से लगभग १ मील पश्चिम में सवांई गाँव के निकट है। रेलवे स्टेशन टूण्डला जकंशन से सवांई गाँव ३ मील है। ऐत्मादपुर होकर आना होता है। सवांई गाँव के निवासी लोगों ने श्री प्रभुजी के यहाँ के निवास काल में उनकी अनेकों चमत्कारिक लीलायें देखीं। उनकी अद्भुत चमत्कृतियों के देखने वाले बहुत से लोग अब भी काफ़ी संख्या में जीवित हैं।

श्री प्रभु जी का यह स्थान सबसे पुराना सिद्ध स्थान है।

पता—श्री सिद्ध गुफा, गुरु का बाग
मु० पो०—सवांई
जिला—आगरा

Adv. Vidit Chauhan Collection, Noida